RNI No. MPHIN/2013/52983

राष्ट्रीय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष-13, अंक-3, जनवरी से मार्च 2026 मूल्य-25/-

- जहां खोजें वहां मिलेंगे हमारे प्रभु श्रीराम
- स्वामी विवेकानंदः भारतीय संस्कृति के शिखर...
- लक्षद्वीप में बढ़ते पर्यटन के साथ गहरा होता कचरा संकट

NewEye Clinic Opened in Chuna Bhatti, Bhopal

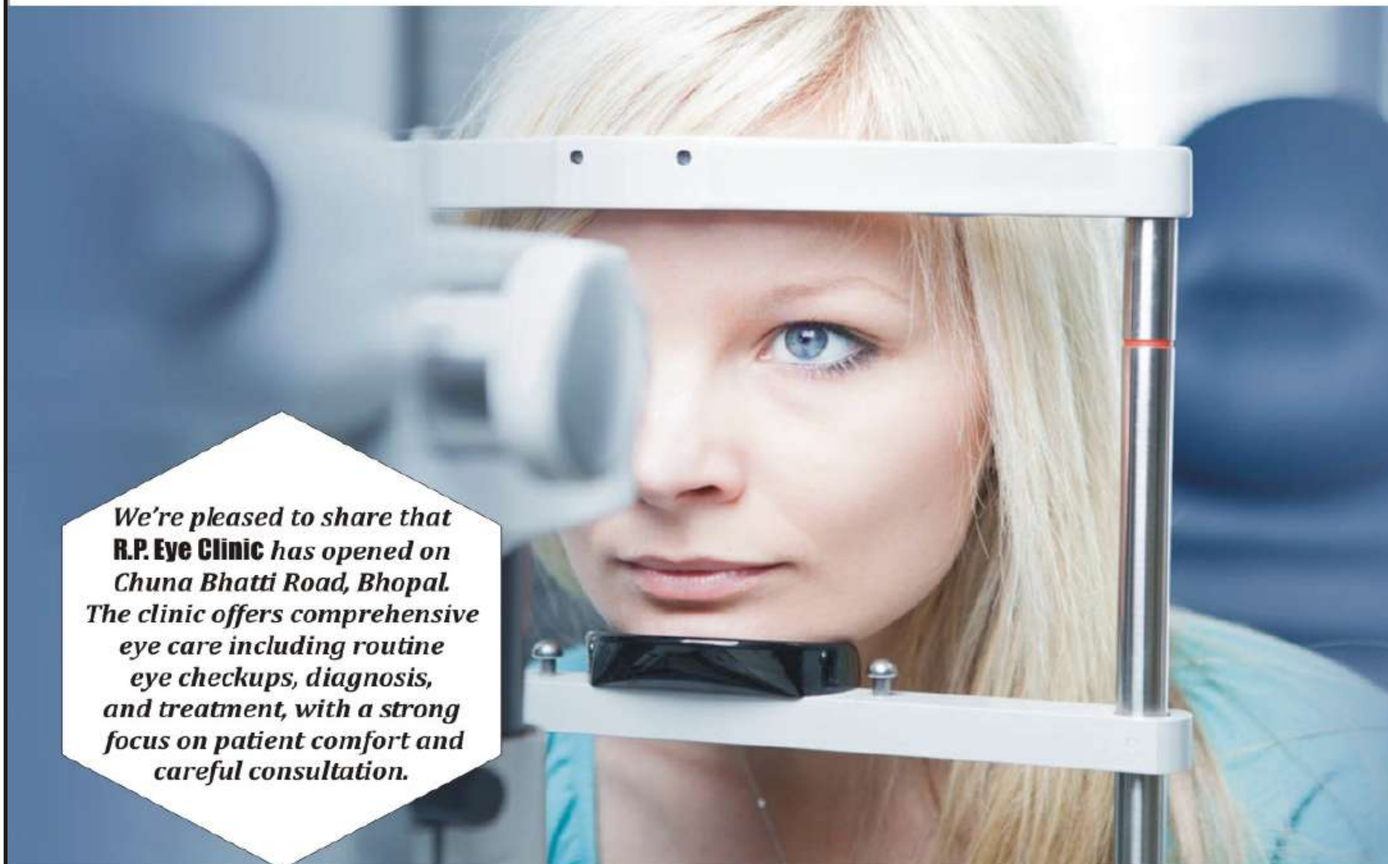

R.P. EYE CLINIC

Vision Care & Eye Surgery

DR. RAVINDRA PRASAD

M.B.B.S., D.O.M.S.
EYE SURGEON
PHACO, GLAUCOMA & REFRACTIVE SURGEON

Dr. Prasad brings over 30 years of experience in ophthalmology , having treated patients across reputed eye hospitals in India.

Formerly associated with:
Dr. Agrawal's Eye Hospital, Salem (T.N.)
Vasan Eye Care Hospital, Salem (T.N.)
Centre For Sight, Indore

If you, your parents, or anyone in your family is looking for a trusted eye doctor nearby, please feel free to visit or share this message with those who may benefit.

Address : A/3 & 4, First Floor Janki Nagar, Chuna Bhatti, Kolar Road, Bhopal

Morning : 10 AM - 2 PM
Evening : 3 PM - 7 PM

Contact : 9827371585
Email: dr_raviprasad@yahoo.com

RNI No MPHIN/2013/52983

राष्ट्रीय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष – 13, अंक–3, जनवरी से मार्च 2026

मूल्य–25 रुपये

सम्पादक
वन्दना अत्रे

स्वत्वाधिकारी,प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक वन्दना अत्रे द्वारा क्लासिक कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स जहांगीराबाद, भोपाल से मुद्रित एवं 'यनी हाऊस', 141, अमरनाथ कॉलोनी, सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल से प्रकाशित।

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। पत्रिका में संग्रहित आलेखों, चित्रों में व्यक्त रचनाकारों, लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
प्रधान कार्यालय: यनी हाऊस 141, अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)– 462042, सम्पर्क : 0755-3504489, 9425004536

सुविचार

संगति आप को ऊंचा उठा भी सकती है और यह आपको ऊंचाई से गिरा भी सकती है, इसलिए संगति अच्छे लोगों से करें।

स्वामी विवेकानंद

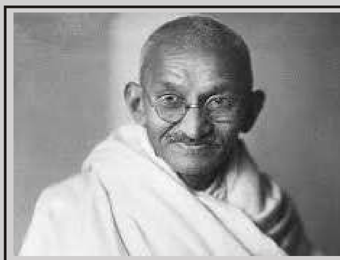

पहले वो आप पर ध्यान नहीं देंगे, फिर वो आप पर हँसेंगे, फिर वो आप से लड़ेंगे, और तब आप जीत जायेंगे।

महात्मा गांधी

मेरे लिए धर्म काम के प्रति निष्ठा है और निष्ठापूर्वक काम करना धार्मिक होना है।

नरेन्द्र मोदी

आमुख कथा
जहां खोजें वहां मिलेंगे हमारे प्रभु श्रीराम
आवरण पृष्ठ फोटो : उत्कर्ष अत्रे
संयोजन : अंकित गौड़

विवरणिका

क्र.	विवरणिका	पृष्ठ
1.	विवरणिका	1
2.	पाठक प्रतिक्रिया	2
3.	विशेष टिप्पणी	3
4.	लक्षदीप में बढ़ते पर्यटन...	4
5.	स्वामी विवेकानंद...	9
6.	जहां खोजें वहां...(आमुख कथा)	12
7.	नववर्ष : आत्ममंथन, संकल्प...	16
8.	युवा शक्ति से विकसित...	18
9.	हमारा संविधान और मन...	20
10.	इतना सहज प्रस्थान ...	21
11.	एक मुलाकात...	23
12.	गीत-ग़ज़ल...	28
13.	बच्चों को मनोरंजन के साथ...	32
14.	रंगमंच	33
15.	ब्रेल लिपि आँखों की...	36

रंग संस्कृति

कार्यकारी संपादक
यतीन्द्र अत्रे

साहित्य संपादक
सुरेश तन्मय

संपादक सहयोग
सुनील उपमन्यु, शिशिर उपाध्याय, डॉ. ओमेन्द्र कुमार, संदीप सृजन, बृजेश बड़ोले, तोताराम अमोदे, वीरेन्द्र काजवे, दविंदर कौर, दीपक चाकरे, महेश अग्रवाल, हरीश दुबे

मार्गदर्शन
मधुबाला अत्रे, विनय उपाध्याय, बालेन्द्र सिंह, अशोक द्विवेदी, संदीप राशिनकर, रवि तिवारी, आदित्य नारायण उपाध्याय, हेमन्त उपाध्याय

फोटो जर्नलिस्ट
दिनेश दवे

विधि सलाहकार
उद्भव अत्रे

रंग संस्कृति में प्रकाशित चित्र, समाचार, रचना, आलेख पर लेखक, रचनाकार से किसी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं लिया जाता हैं और ना ही उन्हें प्रदान किया जाता है। उनकी स्वेच्छिक स्वीकृति के पश्चात सम्पादक मण्डल के अंतिम निर्णय पर ही प्रकाशन सम्भव होता है।

सम्पादक

हस्ताक्षर

- राजेन्द्र शुक्ल
- पूर्णिमा मित्रा
- महेश अग्रवाल
- डॉ. मुकुंद फाटक
- गोवर्धन यादव
- हेमंत उपाध्याय
- संदीप सृजन
- डॉ. योगिता राठौड़
- देशना जैन
- ओमप्रकाश चौरे
- वीरेन्द्र वीर दसौंधी
- डॉ. विजय आर चौरे
- संदीप राशिनकर
- सुरेश तन्मय
- प्रकाश श्रीवास्तव
- रंजीत भालसे
- तोताराम अमोदे
- हुकुमचंद अमोदे
- मंगला शुक्ला
- यतीन्द्र अत्रे

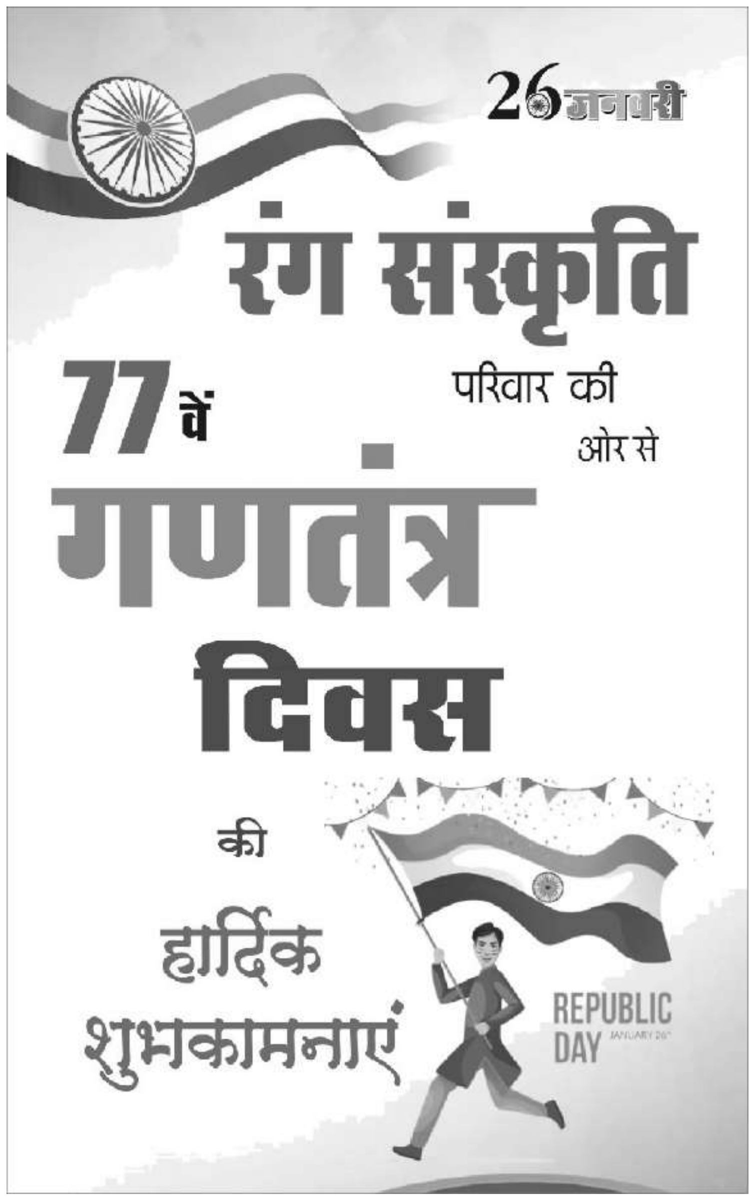

हेलमेट अनिवार्यता: अभियान की सफलता किस पर हो आधारित, डर या जागरुकता

यतीन्द्र अत्रे

माह नवम्बर में प्रदेश के पांच बड़े जिलों जिसमें भोपाल, इंदौर, जबलपुर,ग्वालियर और उज्जैन है, दो पहिया वाहन पर पीछे बैठने वालों के लिए भी हेलमेट पहनना अनिवार्य किया गया है। उसके बाद से समाचार पत्रों के माध्यम से जो तस्वीर सामने आ रही है उनमें वाहन चालक बचने के लिए गुहार लगा रहे हैं तो कुछ लोग अपनी बढ़ती आयु का हवाला देते हुए स्वयं को बचाने का प्रयास करते नजर आए, तो कुछ भूलने का उपक्रम करते माफी रहे थे।इन सब के बीच मजे की बात यह थी की कुछ तो बिना किसी डर के बाइक में हेलमेट टांगे मिले जहां पुलिस को चालान बनाते हुए यह बताना पड़ा कि यह टांगने की वस्तु नहीं है। इस संबंध में चर्चा की जाए तो कुछ युवाओं का तर्क मिलेगा कि हेलमेट उनकी स्मार्टनेस को काम करता है । यहां यह कहना होगा कि हमने 76 वर्ष पूर्ण कर 77 वां गणतंत्र दिवस मनाया है। किंतु विडंबना कहें कि हमारे अंदर इस समझ का विकास हम नहीं कर पा रहे हैं यह सिर–माथे का ताज हमारी सुरक्षा के लिए ही है। पिछले दिनों मुझे 50 दिनों के लिए जापान की यात्रा करने का सौभाग्य मिला, जहां मुझे जापान के प्रमुख शहर टोक्यो, योकोहामा, उत्सुनोमियां को करीब से देखने समझने का अवसर मिला । उस समय मुझे लगा कि जापान ऐसे ही दूसरे देशों के लिए उदाहरण नहीं बना हुआ है। यह देश टेक्नोलॉजी में तो दुनिया में सबसे आगे है उसके अतिरिक्त यदि जापान की पहचान है तो वह वहां के नागरिकों की समझ जिसके अंतर्गत उनका देश उनके लिए पहली प्राथमिकता है। उसके बाद वहां चर्चा इस बात पर होती है कि हमारे कारण किसी दूसरे व्यक्ति को किसी भी तरह से शारीरिक या मानसिक तौर पर हानि नहीं पहुंचनी चाहिए। इस सोच के अंतर्गत वहां की परिवहन व्यवस्था भी कार्य करती है। शहरों के अतिरिक्त राष्ट्रीय राज मार्गो पर भी वाहनों की लंबी कतारों के बावजूद किसी भी वाहन का हॉर्न भूल से भी नहीं सुनाई देता है। जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि यहां वाहन चालक सिर्फ उस समय हॉर्न का प्रयोग करता है जब कोई आपातकालीन स्थिति निर्मित हुई हो या सामने वाले वाहन चालक द्वारा कोई बड़ी गलती की जा रही हो। छोटे चौराहों पर तोम्हारे के चिन्ह अंकित होते हैं जिसका आशय – रुकें देखें फिर आगे बढ़ें... होता है। इस नियम का वहां सभी वाहन चालकों द्वारा सख्ती से पालन कराया जाता है ताकि पैदल चल रहे राहगीर भी चौराहों को प्राथमिकता के आधार पर पार कर सके। हेलमेट की बात करेंगे तो बाइक, मोपेड के अतिरिक्त साइकिल चालकों के लिए भी वहां हेलमेट अनिवार्य है। साइकिल चालकों को वहां पैदल राहगीरों के लिए बने फुटपाथ पर ही साइकिल चलाना होती है। मजे की बात यह भी है कि इन सब के लिए वहां कोई भी पुलिसकर्मी निर्देश देते हुए नहीं दिखाई दिए,यह सब वे अपने समझ से ही करते हैं। किसी वाहन चालक द्वारा दूसरे वाहन को पहले निकालने हेतु साइड देने पर दूसरे वाहन द्वारा पीछे की दो लाइट जलाकर धन्यवाद प्रेषित भी किया जाता है ।

जापान की तकनीक तो हमारे यहां उपयोग होने लगी है किंतु आए दिन जापान की यात्रा करने वाले विशेषज्ञ, नेता,मंत्री का संभवतः इस और ध्यान नहीं गया होगा।

अब यक्ष प्रश्न यह है कि क्या सीट बेल्ट लगाने और हेलमेट पहनने से दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। बात होती है तो दुर्घटना के बाद होने वाली इंजरी को कम करने की, किंतु शहरों में तेज दौड़ते डंपर जो खासकर दुर्घटना का कारण बनते है,सिग्नल तोड़ते वाहन चालक, अस्पताल एवं स्कूल के सामने से बजते प्रेशर हॉर्न – तुझे देखा तो यह जाना सनम...आज भी प्रशासन व्यवस्था को धत्ता दिखाते हैं और कार्रवाई के शिकार होते है सिर्फ वे मध्यम वर्गीय दो पहिया वाहन चालक जिनकी जेब में कभी चालान जमा करने की फीस तक नहीं होती है।

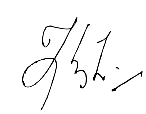

कार्यकारी संपादक
मो. - 9425004536
ई-मेल - y.atre3636@gmail.com

लक्षद्वीप में बढ़ते पर्यटन के साथ गहरा होता कचरा संकट

लक्षद्वीप प्रशासन ने साल 2023 में द्वीप की जैव–विविधता को फिर से बहाल करने के तौर–तरीकों पर एक प्रतियोगिता आयोजित की थी। इसमें पुरस्कार जीतने वाली लघु फिल्म ने लोगों को इधर–उधर कचरा फेंकने की बजाए सामुदायिक कूड़ेदान का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया था।

दो साल बाद, एक अन्य वीडियो में दिखाया गया कि ये सामुदायिक कूड़ेदान हटा दिए गए हैं। वीडियो पोस्ट करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता सबिथ पी.के. ने कहा, "यह विडंबना लक्षद्वीप में कचरा प्रबंधन से जुड़े संकट को दिखाती है।"

लक्षद्वीप की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार भारत का यह सबसे छोटा केंद्र शासित प्रदेश 36 द्वीपों से मिलकर बना है। इनमें से 10 द्वीपों पर आबादी है। पिछले कुछ सालों में, अरब सागर में स्थित चागोस रिज का हिस्सा रहे इस द्वीपसमूह के कई द्वीप निजी कंपनियों को पट्टे पर दिए गए हैं। उदाहरण के तौर पर, सुहेली द्वीप को लैगून विला के लिए एक निजी होटल को पट्टे पर दिया गया है। वहीं निर्जन द्वीप बंजरम और थिन्नकारा को रिसॉर्ट पर्यटन के लिए पट्टे पर दिया गया है।

सबिथ कहते हैं कि लक्षद्वीप में कचरा निपटान की लचर व्यवस्था सबसे तात्कालिक समस्या बन गई है। यहां जमीन सीमित है और लगभग सभी चीजें मुख्य भूमि से प्लास्टिक और दूसरे नॉन–बायोडिग्रेडेबल चीजों में लपेटकर लाई जाती हैं। सबिथ राजनीतिक और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए छोटे वीडियो और व्लॉग का इस्तेमाल करते हैं।

कचरा प्रबंधन में खामियां

दिसंबर 2020 में प्रफुल्ल पटेल के केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासक के तौर पर कार्यभार संभालने से पहले,

लक्षद्वीप में कचरा इकट्ठा करने की व्यवस्था बहुत पुरानी थी। पर्यावरण और वन विभाग के तहत काम करने वाले सफाई कर्मचारी सभी 10 आबाद द्वीपों में कचरा इकट्ठा करते थे। इकट्ठा किए गए कचरे को हर द्वीप पर कचरा रखने वाले मुख्य स्थल में ले जाया जाता था जो स्थानीय निवासियों से लीज पर ली गई जगहों पर बने थे। यहां कचरे को छांटा जाता था। जो कचरा रीसायकल नहीं हो पाता था, उसे अनुबंध वाले खरीदारों के जरिए मुख्य भूमि पर वापस भेज दिया जाता था, जबकि डायपर और सैनिटरी नैपकिन जैसी चीजों को स्थानीय स्तर पर जला

दिया जाता था, क्योंकि उन्हें वापस लेने से इनकार कर दिया जाता था।

फिर 2021 में सामुदायिक कूड़ेदानों में जमा होने वाले कचरे का प्रबंधन करने के लिए निविदा सूचना जारी की गई, जिसमें बताया गया कि दस आबाद द्वीपों पर कुल 3,737 कूड़ेदान लगाए गए थे और इनसे हर दिन लगभग 12 टन प्लास्टिक/ठोस कचरा निकलता था।

पूर्व में सफाईकर्मी रह चुके हबीब के अनुसार यह व्यवस्था भी खामियों से भरी थी। उन्होंने कहा, "तब भी कचरा अलग–अलग करने की प्रक्रिया में दिक्कतें आती थी। वेंडर अक्सर डायपर या सैनिटरी पैड जैसी चीजों को मुख्य भूमि पर भेजने से इनकार कर देते थे। जिस कचरे को वे ले जाने के लिए तैयार होते थे, उसमें भी परिवहन संबंधी दिक्कतों के कारण देरी होती थी। पिछले चार सालों से लक्षद्वीप से कोई कचरा बाहर नहीं भेजा गया है। सभी कचरा डिपो में इंसीनेरेटर लगाए गए थे, लेकिन पिछले आठ सालों से ये सभी बंद पड़े हैं।"

हबीब उन 3,500 कर्मचारियों में शामिल थे जिन्हें मार्च 2022 में बड़े पैमाने पर नौकरी से निकाल दिया गया था। अब वह नारियल के बागानों में काम करते हैं और अपने कई पुराने साथियों की तरह मुश्किलों का

सामना कर रहे हैं।

कर्मचारियों को निकाले जाने के बाद पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग ने 2021 में कचरा प्रबंधन की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों को सौंप दीं। दो दशक पहले भी यही व्यवस्था थी।

हालांकि, कचरा उठाने के काम को ठेका पर देने की नाकाम कोशिश के बाद, पंचायतों ने सड़कों से सामुदायिक कूड़ेदान हटा दिए।

किल्टन में रहने वाले सामाजिक कार्यकर्ता महदा हुसैन ने कहा, "अब हफ्ते में सिर्फ एक बार एक गाड़ी घरों से कचरा इकट्ठा करती है और इसे बिना अलग किए कचरा डिपो में डाल देती है। शुरुआती स्तर पर कचरा अलग–अलग नहीं किए जाने की वजह से CGD डंपिंग यार्ड बन गया है, जिसका पारिस्थितिकी पर गंभीर दुष्प्रभाव हो रहा है। कभी–कभी तो कचरे के ढेर में आग लग जाती है, जिससे नुकसान बड़ा हो जाता है।"

पिछले साल जुलाई में, हुसैन ने CGD में लगी आग के बाद पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में शिकायत की थी। मंत्रालय ने इसे केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और लक्षद्वीप प्रदूषण नियंत्रण समिति को भेज दिया था।

पहले चेतलत में रहने वाली और अब मिनिकॉय की फातिमा कुरैशा ने कहा कि मंत्रालय के सख्त निर्देशों के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की गई है। कचरे का ढेर बड़ा होता जा रहा है और इससे कचरा समुद्र में जा रहा है, क्योंकि यार्ड तट के पास है।

पर्यटन में तेजी और बढ़ता कचरा संकट

कचरा प्रबंधन व्यवस्था के नाकाम होने के साथ ही द्वीपों पर बड़ा बदलाव भी हुआ हैरू पर्यटन में जबरदस्त तेजी आई है। पर्यटकों की संख्या में इस तेजी से पहले से ही खराब सिस्टम पर और दबाव बढ़ा दिया है।

हाल के सालों में, लक्षद्वीप में सैलानियों की संख्या तेजी से बढ़ी है। अप्रैल से जून 2024 के बीच द्वीपों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या में साल–दर–साल के हिसाब से 107: की बढ़ोतरी देखी गई। 2024 में इस अवधि के दौरान 22,990 सैलानी आए, जबकि 2023 में इसी अवधि में यह तादात 11,074 थी। ट्रैवल प्लेटफॉर्म डांमडलज्तपच ने भी लक्षद्वीप के लिए ऑनलाइन सर्च में 3,400: की बढ़ोतरी की जानकारी दी है।

आगत्ती के एक टूर ऑपरेटर ने सरकार की कार्रवाई के डर से नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया, "आम धारणा यह है कि लक्षद्वीप में कचरे का संकट पर्यटन की वजह से और बढ़ गया है, लेकिन यह अकेला कारण नहीं है।" उन्होंने कहा, "बंगाराम को छोड़कर, 2000 के दशक तक लक्षद्वीप में पर्यटन सीमित था। हाल के सालों में इसमें तेजी आई है, क्योंकि भारत सरकार इन द्वीपों पर पर्यटन को बढ़ाना चाहती है। भारत और मालदीव के बीच कूटनीति तनाव के दौरान 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी लक्षद्वीप का दौरा किया था। लेकिन यह बढ़ोतरी बिना किसी योजना या तैयारी के हुई। अकेले आगत्ती के दक्षिणी हिस्से में कम से कम 89 रिसॉर्ट और कमरे हैं। हर फैसिलिटी को हर कमरे में रोजाना कम से कम दो बोतलबंद पानी देना होता है। इसका मतलब है कि हर दिन सैकड़ों सिंगल–यूज बोतलें फेंकी जाती हैं। फिर भी, यहां बोतल क्रशर नहीं हैं और ना ही कचरा फेंकने के लिए कोई तय जगह है।" उन्होंने आगे कहा कि सरकार हर सैलानी से प्रतिदिन ₹200 की हेरिटेज फीस लेती है, लेकिन उनका दावा है कि इस रकम का आज तक इस्तेमाल नहीं किया गया है।

आगत्ती के एक मछुआरे मुहम्मद शाहजहां ने कहा, "गैर–सरकारी या स्थानीय क्लब कभी–कभी बीच की सफाई करते हैं और इसके अलावा कोई व्यवस्था काम नहीं कर रही है।" "मछुआरे होने के नाते, हम अक्सर तटों

के किनारे से कचरा उठाते हैं, लेकिन सामुदायिक कूड़ेदान नहीं होने से यह भी मुश्किल हो जाता है।"

कवरत्ती के गोताखोर समीर अमन ने कहा, "पानी के अंदर हर जगह डाइपर पड़े हैं।" "पर्यटन बढ़ने से पहले भी, गोताखोर बिना सोचे–समझे कचरा फेंकने और कचरा प्रबंधन में खामियों की शिकायत करते थे। हम इसे द्वीपों में अपनी गोताखोरी के दौरान सबसे पहले देखते हैं। हम अपनी तरफ से सफाई करने की पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन अब हालात से निपटने के लिए बड़ी, संगठित कोशिश की जरूरत है।"

अन्य क्षेत्रों पर असर

पिछले कुछ दशकों में पर्यटन के अलावा मछली पालन सेक्टर भी तेजी से बढ़ा है। मछली का उत्पादन 1950 के दशक में लगभग 500 टन से बढ़कर 2024–25 में 16,891 मीट्रिक टन हो गया है। तटों पर प्लास्टिक की मौजूदगी पर साल 2020 में किए गए एक अध्ययन में यह नतीजा निकला कि लक्षद्वीप में प्लास्टिक प्रदूषण की दो मुख्य वजहें मछली पकड़ना और पर्यटन हैं। अब, तेजी से पर्यटन बढ़ने और कचरे की बढ़ती मात्रा का असर मछली पालन पर भी पड़ने लगा है।

लक्षद्वीप में रहने वाले समुद्री सामाजिक–पारिस्थितिकी के अध्येता जॉन एडम ने कहा, "पिछले कुछ सालों में, पर्यटन की वजह से द्वीपों पर पैदा होने वाले कचरे की मात्रा तेजी से बढ़ी है। कचरे के प्रबंधन में खामियों ने स्थिति को और जटिल बना दिया है। हालांकि, पर्यटन की तुलना में मछली पालन सेक्टर बहुत कम कचरा पैदा करता है, लेकिन इस प्रदूषण से वहां दिक्कते पैदा हो रही हैं। समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और उन पर निर्भर आजीविका इसका खामियाजा भुगत रहे हैं।"

उन्होंने कहा कि द्वीपों पर प्लास्टिक बहुत ज्यादा जमा हो गया है और इसका माइक्रोप्लास्टिक में बदलना समुद्री खाद्य श्रृंखला के लिए खतरा है। "जब प्लवक (प्लैंकटन) इन माइक्रोप्लास्टिक को खा लेते हैं, तो वे तेजी से खाद्य श्रृंखला में ऊपर आते हैं और आखिर में इंसानों तक पहुंच जाते हैं।"

एनवायरनमेंटल साइंस एंड पॉल्यूशन रिसर्च में पब्लिश एक अध्ययन के मुताबिक कवरत्ती के आसपास स्किपजैक टूना मछली की आंतों में माइक्रोप्लास्टिक पाए गए हैं। यह लक्षद्वीप के लिए चिंताजनक है, जहां टूना प्रोसेसिंग, कैनिंग और निर्यात कुछ ही कामयाब आर्थिक गतिविधियों में से हैं।

मेडिकल कचरे से बढ़ता संकट

पहले, लक्षद्वीप में मेडिकल कचरे के निपटान की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों के पास ही थी। किल्टन के वरिष्ठ सफाई कर्मचारी अब्दुल सलाम ने बताया कि निपटान के लिए कोई खास सुविधा न होने से इस कचरे को दूसरे सामानों के साथ मुख्य कचरा डिपो में फेंक दिया जाता था। कुछ साल पहले, कर्मचारियों ने बिना सही उपकरण या सुरक्षा गियर के खतरनाक कचरे को अलग करने से इनकार कर दिया था। तब से, मेडिकल कचरे के निपटान की पूरी जिम्मेदारी चिकित्सा विभाग और अलग–अलग अस्पतालों पर है।

लक्षद्वीप में दो मुख्य अस्पताल हैं। एक कवरत्ती में और दूसरा मिनिकॉय में। साथ ही, आगत्ती में एक स्पेशलिटी अस्पताल और पूरे द्वीपों में कई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। दिसंबर 2024 में खुले में बायोमेडिकल कचरा जलाने के आरोप के बाद कवरत्ती के इंदिरा गांधी अस्पताल को आलोचना झेलनी पड़ी थी। अस्पताल ने इस दावे से इनकार किया था। इस घटना के एक गवाह सदाकत ने कहा, "हर दिन जितना बायोमेडिकल कचरा निकलता है और इसकी खतरनाक प्रकृति को देखते हुए, असली सवाल यह है: इसका क्या किया जा रहा है? लक्षद्वीप में कहीं भी इसके निपटान के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं है।"

शोधकर्ता चेतावनी देते हैं कि लक्षद्वीप के कचरे के संकट को वैश्विक महासागरीय प्रदूषण के संदर्भ में भी

देखा जाना चाहिए। स्थानीय गैर–लाभकारी संस्था से जुड़े एक शोधकर्ता ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, " अनियंत्रित पर्यटन के साथ लचर कचरा प्रबंधन नाजुक समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा पैदा कर रहा है।"

स्थानीय स्तर पर कॉन्टेंट बनाने वाले क्रिएटर के लिए यह स्थिति शासन की समस्या को दिखाती है। "हमारी फिल्म सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई थी। जिन सामुदायिक कूड़ेदानों को हमने लोगों को इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया था, आज वे गायब हो गए हैं। अब वह कचरा कहां जा रहा है?" लघु फिल्म बेंजाअल के डायरेक्टर नवाज के.आर. ने सवाल उठाया।

लक्षद्वीप में यूथ कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजमल अहमद ने कहा कि यह संकट व्यापक प्रशासनिक नाकामी की मिसाल है। उन्होंने कहा, "परिवहन से लेकर कचरा प्रबंधन तक, लक्षद्वीप को नौकरशाही के ऐसे तंत्र द्वारा चलाया जा रहा है जिसकी अगुवाई गैर–निर्वाचित प्रशासक करता है। अभी फोकस पर्यटन के लिए बड़े प्रोजेक्ट बनाने पर है, जबकि कचरा प्रबंधन जैसी बुनियादी सेवाओं को नजरअंदाज किया जा रहा है।"

साभार – hindi.mongabay.com

कहानी उसुल के पक्के फौजी की...

हेमंत उपाध्याय

रेल के आते ही सब लोग जगह के लिए डिब्बों की ओर दौड़ने लगे। आगे लगे साधारण डिब्बे में लटकने की जगह भी फूल होने से एक फौजी बिना आरक्षण टिकिट के द्वितीय श्रेणी के आरक्षण के डिब्बे में बैठ गया क्योंकि और भी लोग उस डिब्बे में साधारण टिकिट पर बिना आरक्षण के बैठ गए थे। सब से पचास – पचास रुपए लेकर टी.सी. ने बर्थ साधारण टिकिट पर ही बिना रसीद दिये आलॉट कर दी।

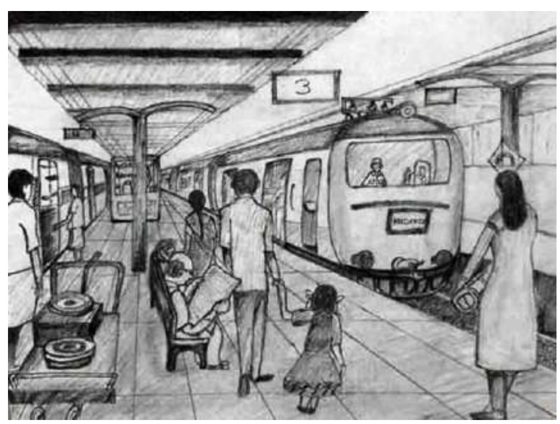

फौजी से टिकिट माँगा सब की तरह उसने भी साधारण टिकिट दिखा दिया। टीसी ने कहा– ये आरक्षित कोच है। लाओ पचास रुपए फौजी ने कहा– हम न रिश्वत लेते हैं न देते हैं। टी.सी. ने कहा– हम भी बिना लिये बर्थ तो दूर आरक्षण के डिब्बे में घुसने भी नहीं देते हैं। पीछे सामान्य अनारक्षित कोच में जाओ। फौजी नहीं गया। टी.सी. ने एक झापड़ रसीद कर दिया। उसके विरोध करने पर उसके साथ कोई नहीं आया। ऊधर टी.सी. ने मोबाईल कर पूरे डिब्बे के टीसियों को व दो आरपीएफ के जवान बुला कर गाँधी जी की तरह उसका सामान प्लेट फार्म पर पटकवा दिया ।

यह देख एक समझदार ने उसे समझाईश दी भाई टी.सी. उसुल के पक्के होते हैं वे रेलवे का घाटा कर सकते हैं पर स्वयं की ऊपरी कमाई में कमी नहीं सहन करते। आपके पचास रुपये मैं दे देता हूँ। उसने कहा– मैं भी उसुल का पक्का हूँ रिश्वत नहीं लेता और नहीं दे सकता और वो सामान्य कोच की तरफ दौड़कर गया और शौचालय के पास अपनी पेटी पर प्लास्टिक की थैली बिछा सो गया। लोग बोल रहे थे जीतेजी बेचारे फौजियों की कोई कदर नहीं होती।

लघु कथाकार, व्यंग्यकार
साहित्य कुटीर, पंडित राम नारायण उपाध्याय, खंडवा
मो. : 7999749125

स्वामी विवेकानंदः भारतीय संस्कृति के शिखर और युवाओं के प्रेरणास्रोत

संदीप सृजन

स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति के एक ऐसे शिखर हैं, जिनकी चमक आज भी पूरे विश्व को रोशन कर रही है। वे न केवल एक महान दार्शनिक और आध्यात्मिक गुरु थे, बल्कि युवाओं के लिए एक अनंत प्रेरणा स्रोत भी। 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, जब भारत ब्रिटिश उपनिवेशवाद की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति की गरिमा को पुनर्जीवित किया। उन्होंने वेदांत दर्शन को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया और युवाओं को आत्मविश्वास, साहस और सेवा भावना से ओतप्रोत किया। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था, और वे रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे। स्वामी विवेकानंद का जीवन छोटा था, मात्र 39 वर्ष। लेकिन उनके विचारों की गहराई और प्रभाव इतना विशाल है कि वे आज भी लाखों युवाओं को प्रेरित करते हैं। 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई। उन्होंने कहा, बहनों और भाइयों, जो अमेरिकी श्रोताओं को इतना प्रभावित किया कि वे तालियों से गूंज उठे। यह भाषण भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिकता का प्रतीक था।

स्वामी विवेकानंद का जीवन संघर्षों से भरा था, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। बचपन में वे खेलकूद और पढ़ाई में अव्वल थे। उन्होंने स्कॉटिश चर्च कॉलेज से दर्शनशास्त्र में स्नातक किया। पश्चिमी दार्शनिकों जैसे ह्यूम, कांट और स्पेंसर से प्रभावित होने के बावजूद, वे भारतीय वेदांत की गहराई में डूबे रहे। 1881 में रामकृष्ण से पहली मुलाकात हुई, जब नरेंद्र ने पूछा, क्या आपने ईश्वर को देखा है? रामकृष्ण का उत्तर था, हां, मैंने देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूं। इस मुलाकात ने नरेंद्र के जीवन की दिशा बदल दी। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद, विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है।

1890 से 1893 तक वे भारत भ्रमण पर निकले। इस दौरान उन्होंने देश की गरीबी, अज्ञानता और सामाजिक कुरीतियों को निकट से देखा। वे पैदल यात्रा करते, गांवों में रुकते और लोगों से बातचीत करते। कन्याकुमारी में ध्यान करते हुए उन्हें भारत के उत्थान का संदेश मिला। उन्होंने महसूस किया कि भारत की संस्कृति में छिपी शक्ति को जगाना होगा। शिकागो धर्म संसद में उनका भाषण एक मील का पत्थर था। उन्होंने हिंदू धर्म को सहिष्णुता और एकता का प्रतीक बताया, कहा कि सभी धर्म सत्य हैं, जैसे अलग–अलग नदियां समुद्र में मिलती हैं। इस भाषण ने पश्चिम को भारतीय आध्यात्मिकता से परिचित कराया। अमेरिका और इंग्लैंड में प्रवास के दौरान उन्होंने कई व्याख्यान दिए, योग और वेदांत पर किताबें लिखीं। 1897 में भारत लौटकर उन्होंने रामकृष्ण

मठ की स्थापना की। उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा, लेकिन वे रुके नहीं। 4 जुलाई 1902 को बेलूर मठ में उनका निधन हुआ।

स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति के शिखर हैं, क्योंकि उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन को आधुनिक रूप दिया। भारतीय संस्कृति की जड़ें वेद, उपनिषद और गीता में हैं, लेकिन औपनिवेशिक काल में यह सब दबा हुआ था। विवेकानंद ने वेदांत को पुनर्जीवित किया। उन्होंने कहा, उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। यह नारा भारतीय संस्कृति की आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। उन्होंने हिंदू धर्म को एक विज्ञान की तरह प्रस्तुत किया, जहां आस्था और तर्क का सामंजस्य है। उनका योगदान सामाजिक सुधार में भी है। वे जातिवाद, अंधविश्वास और महिलाओं की दशा के खिलाफ थे। उन्होंने कहा, महिलाओं का उत्थान किए बिना राष्ट्र का उत्थान असंभव है। भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का रूप माना जाता है, लेकिन व्यवहार में वे उपेक्षित थीं। विवेकानंद ने शिक्षा और सशक्तिकरण पर जोर दिया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से स्कूल, अस्पताल और अनाथालय स्थापित किए, जो भारतीय संस्कृति की सेवा भावना को दर्शाते हैं।

विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर स्थापित किया। पश्चिम में वे हिंदू धर्म के राजदूत बने। उनकी किताबें जैसे राज योग, कर्म योग और ज्ञान योग ने योग को लोकप्रिय बनाया। आज योग अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है, जिसकी नींव विवेकानंद ने रखी। उन्होंने भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिकता पर जोर दिया, कहा कि भारत का संदेश शांति और सद्भाव है। उनकी शिक्षाएं पर्यावरण, स्वास्थ्य और मानसिक शांति से जुड़ी हैं, जो आधुनिक दुनिया की जरूरत हैं।

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और विज्ञान का मेल विवेकानंद की देन है। उन्होंने कहा, धर्म विज्ञान है, और विज्ञान धर्म। यह विचार भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को आधुनिक बनाता है। वे राष्ट्रीयता के प्रतीक थे, जिन्होंने स्वदेशी भावना जगाई। विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को एक जीवंत शक्ति बनाया, जो आज भी प्रासंगिक है। स्वामी विवेकानंद युवाओं के आदर्श हैं। उनका जीवन युवाओं को सिखाता है कि उम्र कोई बाधा नहीं। मात्र 30 वर्ष की आयु में उन्होंने विश्व को प्रभावित किया। युवाओं से वे कहते थे, मेरे युवा मित्रों, तुममें अनंत शक्ति है। यह संदेश युवाओं में आत्मविश्वास जगाता है। आज की पीढ़ी सोशल मीडिया, तनाव और अनिश्चितता से घिरी है, लेकिन विवेकानंद की शिक्षाएं मार्गदर्शन करती हैं। वे युवाओं को कर्म योग सिखाते हैं। उन्होंने कहा, कर्म करो, फल की चिंता मत करो। यह युवाओं को मेहनत और समर्पण का पाठ पढ़ाता है। स्टार्टअप कल्चर में युवा उद्यमी उनसे प्रेरित होते हैं। विवेकानंद ने शिक्षा पर जोर दिया, कहा कि षशिक्षा वह है जो मनुष्य को स्वतंत्र बनाती है। वे चाहते थे कि युवा पढ़ें, सोचें और समाज की सेवा करें। रामकृष्ण मिशन के कॉलेज युवाओं को आध्यात्मिक और व्यावहारिक शिक्षा देते हैं। वे फिटनेस पर जोर देते थे, कहा कि शरीर स्वस्थ हो तो मन स्वस्थ। योग और ध्यान युवाओं को मानसिक स्वास्थ्य देते हैं।

आज के युवा सामाजिक मुद्दों जैसे पर्यावरण, असमानता और गरीबी से जूझते हैं। विवेकानंद की सेवा भावना प्रेरित करती है। उन्होंने कहा, दारिद्र्य नारायण की सेवा करो। युवा एनजीओ और वॉलंटियरिंग में सक्रिय होते हैं, विवेकानंद से प्रेरित होकर। उनकी किताबें युवाओं को पढ़नी चाहिए, जैसे मेरा भारत या व्याख्यान संग्रहष। राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी को उनके जन्मदिन पर मनाया जाता है, जो युवाओं को समर्पित है। विवेकानंद युवाओं को राष्ट्रीयता सिखाते हैं। उन्होंने कहा, भारत के लिए जीओ, भारत के लिए मरो। युवा राजनीति और समाज सेवा में उनसे प्रेरित होते हैं। डिजिटल युग में उनके विचार सोशल मीडिया पर वायरल होते हैं, युवाओं को मोटिवेट करते हैं। वे कहते थे, एक विचार लो, उसे अपना जीवन बनाओ। यह युवाओं को फोकस सिखाता है।

विवेकानंद का दर्शन वेदांत पर आधारित है। उन्होंने अद्वैत वेदांत को सरल बनाया, कहा कि सब कुछ ब्रह्म है। यह एकता का संदेश है, जो विभेद मिटाता है। आधुनिक दुनिया में धार्मिक कट्टरता के खिलाफ यह हथियार है। उनका कर्म योग गीता से प्रेरित है, जो सक्रिय जीवन सिखाता है। भक्ति योग में वे प्रेम और समर्पण

पर जोर देते हैं। ज्ञान योग में तर्क और विवेक। राज योग में ध्यान और योगासन। स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति के शिखर हैं, जिन्होंने इसे वैश्विक बनाया। वे युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं, जो साहस, सेवा और आत्मविश्वास सिखाते हैं। उनका जीवन हमें बताता है कि एक व्यक्ति दुनिया बदल सकता है। आज के युवाओं को उनके विचार अपनाने चाहिए, ताकि भारत विश्व गुरु बने। विवेकानंद अमर हैं, उनके शब्द अनंत काल तक प्रेरित करेंगे।

लेखक के ये अपने विचार हैं।
स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तम्भकार

संपादक- शाश्वत सृजन
ए-99 वी.डी/मार्केट, उज्जैन 456006
मो.9406649733

भारत पर्व में गूंजा बघेली लोकनृत्य, सतना के कलाकारों ने बाँधा समां

मऊगंज। भारत पर्व के अवसर पर सतना जिले से पहुँचे लोक कलाकारों ने अपनी सजीव और मनमोहक बघेली भगत (काली खाप्पड़) लोकनृत्य प्रस्तुति से दर्शकों का दिल जीत लिया। तिरंगा वेशभूषा, लोकधुनों और सजीव भाव–भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत नृत्य ने पूरे पंडाल को बघेली संस्कृति के रंग में रंग दिया। कार्यक्रम के दौरान कलाकारों ने बघेली अंचल की लोकपरंपरा, जीवनशैली और सांस्कृतिक विरासत को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया। भगत के साथ ही बघेली फाग गीतों की प्रस्तुति भी दी। मुख्य अतिथियों में मऊगंज कलेक्टर जिला शिक्षा अधिकारी, जिला समन्वयक पी आर ओ एवं अन्य कई प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। ढोलक, मंजीरा और लोकगीतों की लय पर थिरकते कलाकारों की प्रस्तुति को मुख्य अतिथियों एवं दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सराहा। कलाकारों में, रामायण कुशवाहा, पुष्पेंद्र द्विवेदी, रामहित कुशवाहा, रामजी विश्वकर्मा, रोशनलाल आदिवासी, गिरजा कुशवाहा, शंकर साकेत, बसंतलाल साकेत, झल्ला रावत,रामदीन सोंधिया , भारत आदिवासी इत्यादि थे।

जहां खोजें वहां मिलेंगे हमारे प्रभु श्रीराम

जापान के बांदो,इबाराकी में है श्रीराम मंदिर, जहां दो से तीन हजार भारतीय प्रतिवर्ष मनाते हैं सभी पर्व,उत्सव। संस्थापक गुलाबराय गंभीर और चेयरमैन मुकेश कुमार सिंह को विश्वास है, बनाएंगे यहां अयोध्या जैसा मंदिर,जिसमें होगा विवाह मंडप,योगकेंद्र और प्रदान होगी वेदों की शिक्षा...

यतीन्द्र अत्रे

कहा जाता है कि ईश्वर हर जगह मिल सकता है,यानी कि जहां आस्था, विश्वास, मान्यता है वहां ईश्वर को खोजा जा सकता है। लेकिन आस्था के विरुद्ध बुराईरूपी रावणों की संख्या भी तो दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है,संभवतः इसीलिए बारिश के बाद हम अपने निवास स्थान की रंगाई पुताई करते हैं स प्रतिवर्ष दशहरा और दीवाली जैसे पर्वों पर प्रवचन एवं सकारात्मक विचारों के आदान प्रदान से बुराइयों के प्रतीक रावण का दमन करते आए हैं। मुझे याद है जब मेरी जापान यात्रा आरंभ होनी थी उसी समय विनय भाई (प्रसिद्ध उद्घोषक एवं कला समीक्षक) श्रीलंका यात्रा के लिए निकलने वाले थे मैंने उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित की, प्रति उत्तर में उन्होंने मेरी जापान यात्रा पर खुशी जाहिर करते हुए कहा– जो जहां हो वहीं के रावण का दमन करें३ कवि, साहित्यकार हो या समीक्षक उनके शब्दों में जादू होता है उनके द्वारा सहजता में कही गई बात में भी गूढ़ अर्थ छुपा होता है। अब यह तो पुरानी कहावत है कि जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि,यानी कि कवि महोदय कभी कभी ऐसे अनछुए विषयों की गहराई तक पहुंच जाते हैं जहां सूरज की किरणें भी ना पहुंच पाए।हालांकि यह तो रही कहावत, लेकिन यह तो मानना होगा कि ढूंढने जाएंगे तो आज विश्व के हर कोने में भारतवासी मिल जाएंगे और यकीन मानिए जनाब वे सभी वहां अपना समूह बना एक छोटा भारत बनाने की जुगत कर रहे होंगे।विदेशों में जहां भारतीय त्योहारों के लिए छुट्टी नहीं होती हैं वहां सप्ताह के अंत पर ही त्यौहार मनाने का चलन होता है। ऐसे ही दशहरे के बाद के रविवार को दशहरा पर्व के उपलक्ष

में एक भारतीय समूह के साथ उत्सुनोमिया शहर से रावण का दमन करने हम लोग निकले। लेकिन रास्ते में मेरे मन में इन सबसे परे एक विचार कौंध रहा था कि, वे व्यक्ति कितने महान होंगे जो कई समुंदर पार भारतीय त्योहार,भारत की संस्कृति को कायम रखे हुए हैं और अपने देश से हजारों मील दूर श्री राम के भक्त के रूप में अपनी पहचान बना रहे हैं । टोक्यो हाईवे पर लगभग डेढ़ घंटे की दूरी के बाद हमारी कार हाईवे छोड़ एक छोटे किंतु व्यवस्थित गांव बांदो की ओर मुड़ती है, सड़क के दोनों और पत्ता गोभी, बैंगन, नींबू के बड़े–बड़े फॉर्म दिखाई देते हैं और उसके बाद बांदो में प्रवेश, यहां मन को प्रफुल्लित करने वाले कुछ संस्थानों पर भारतीय नाम दिखाई देते है, जिससे यह अनुमान तो हो गया कि यहां अपने वतन के लोगों का प्रतिनिधित्व है स गांव से होते आगे बढ़ते ही कुछ दूरी पर मंदिर की घंटी की मधुर ध्वनि श्री राम के दर्शन की हमारी आतुरता को और बढ़ा देती है। फिर दिखाई दिए हमारे जैसे कई भारतीय चेहरे जिन्हें हम पिछले कई दिनों से ढूंढ रहे थे। कुछ लोग मंदिर आने वाले वाहनों की व्यवस्थित पार्किंग करा रहे थे। सबसे पहले प्रभु दरबार पहुंचे भगवान श्रीगणेश, महादेव भगवान जगन्नाथ,देवी दुर्गा, बजरंगबली सबके दर्शन एक साथ, वाह प्रभु आपकी लीला अपरंपार और यहां मिले प्रभु के भक्तों के रूप में भारतीय परिधानों से सजे–धजे नर नारी तथा उनके बाल गोपाल। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सबसे पहले प्रभु की आरती, कन्या भोज फिर सभी के लिए प्रसादी भंडारा। इन सब कार्यों में सम्मिलित होते हुए दोपहर कब बीत गई पता ही ना चला। फिर वहीं भंडारे की जगह सजने लगा मां का दरबार, रंग–बिरंगे लहराते परिधानों के रूप में कभी मुझे गुजरात,महाराष्ट्र की झलक दिखाई दी तो कभी उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब के बीच गरबों की धूम, मां का जय घोष करती मधुर ध्वनि से ऐसा दृश्य बन चला था कि बस उन्हें निहारते रहें पर इन सब के बीच भी मेरी दृष्टि उस व्यक्ति पर थी जिसने कुछ समय के लिए यहां एक छोटे भारत

श्रीराम मंदिर के प्रमुख ट्रस्टी श्री गंभीर गुलाबराय (दाहिने) एवं श्री मुकेश(मध्य में) से चर्चा करते हुए रंग संस्कृति के संपादक यतीन्द्र अत्रे

का दृश्य बनाया था। कहते हैं कि पूछने पर भगवान भी मिल जाते हैं सोचा क्यों ना उन्हीं का स्मरण भी कर ले, तभी नीले कुर्ते और सफेद पायजामा पहने गले में गमछा लटकाए सज्जन हमारी ओर आते दिखाई दिए। एक भाई साहब ने कहा यही है गंभीर साहब उनसे मिले तो आत्मीयता की अनुभूति हुई। बातचीत के दौरान ही मैंने उनसे 5 मिनट का समय चर्चा के लिए मांगा जिसे उन्होंने उसे सहर्ष ही स्वीकार कर लिया। गंभीर साहब ने एक और सज्जन जो उन्ही की तरह कुर्ता पजामा पहने थे, साथ लिया और मंदिर प्रांगण में बने कार्यालय मे हमें बैठने के लिए कहा स चर्चा में मेरे साथ मेरे बेटे और उत्सुनोमिया में रंग संसति के प्रतिनिधि उत्कर्ष थे स पहला परिचय साथ में आए सजन का हुआ, बताया गया कि वे मुकेश सिंह है जो हमारे ट्रस्ट के चेयरमैन हैं,और फिर स्वयं गंभीर साहब ने अपना परिचय गंभीर गुलाब राय के रूप में दिया स उन्होंने बताया कि मैं उत्तराखंड का मूलनिवासी हूं और मुझे जापान में 33 वर्ष हो रहे हैं 19 वर्ष की आयु में मैं यहां आया स क्षण भर के लिए उत्कर्ष और मैने एक दूसरे की ओर देखा और अपनी भाव भंगिमाओं से यह तय किया कि हमें जो जानकारी चाहिए इन्हीं राम–लक्ष्मण की जोड़ी से मिलनी है३वार्ता आरंभ करते हुए जब उनसे हमने पूछा कि अपने देश की मिट्टी से हजारों मील दूर यहां आपको मन में कैसे ये विचार आया कि यहां श्रीराम का मंदिर होना चाहिए ? गुलाबराय अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए पिता का संदर्भ आने पर इतने भावुक हो गए कि अगले ही पल उनकी आँखों से अश्रु बहने लगे, हम हतप्रद थे कि अचानक ऐसा क्या हुआ हालांकि देखा जाए तो हर उस भारतीय की कहानी गुलाब राय जैसी होगी जिन्होंने विदेशी धरती बिना सहारे पहली बार कदम रखा होगा। स्वयं को मजबूत करते हुए उन्होंने अपना वृतांत आरंभ किया३जब ऐसा हुआ कि मुझे यहां आए लंबा समय हो गया, आर्थिक स्थिति में भी कुछ सुधार हुआ स तब ऐसा लगा कि कोई व्यक्ति जैसे अपनी पहचान भिन्न–भिन्न तरीके से बनाता है, कोई राजनीति तो कोई अन्य तरीके से, मेरे मन में भी कुछ ऐसा विचार था कि यहां हम सभी संघर्षशील हैं, यदि यहां कोई ऐसा कम्युनिटी सेंटर बनाया जाए जहां हम सब भारतीय इकट्ठे हो सके स इसी तारतम्य में मै कुछ लोगों को साथ लेकर जब इस जगह को देखने आया तब मेरे साथियों का यह विचार बना की इस उद्देश्य के लिए यह जगह काफी दूर होगी, सो शहर में दूसरा स्थान चुना गया, लेकिन मेरे मन को तो लगातार यह बात कचोट रही थी कि मंदिर ऐसी जगह बने जहां सिर्फ मैं शब्द का उपयोग ना हो क्योंकि मंदिर तो सबका होना चाहिए स खुली जगह, ज्ञान के लिए शांत वातावरण और फिर अधिक से अधिक संख्या में लोग इकट्ठे हों, अपने पर्व–उत्सव एक साथ मना सके स इस भावना के साथ मैंने अपने साथियों को इसी जगह के लिए जैसे तैसे तैयार कर लिया स फिर मुकेश जी का साथ मिला, कुछ और लोग जुड़े स एक समिति बनाई और यह जमीन जो आप देख रहे हैं जिसका मालिकाना हक मेरा था स पहले प्राथमिकता देते हुए मैंने उसे ट्रस्ट के नाम हस्तांतरित कर दिया स फिर सच्ची श्रद्धा से इस पावन कार्य में हम सब लोग मिलकर जुट गए,परिणाम आप सबके सामने है स पहले यहां कुल 100 व्यक्ति एकत्र हुए फिर 500 और अब हम यहां प्रतिवर्ष लगभग 3 हजार भारतीय श्रद्धालुओं की व्यवस्था को अंजाम देते हैं। अयोध्या में जब श्रीराम का मंदिर बनना आरंभ हुआ उसी दौरान हमने भी प्रभु श्रीराम का स्मरण करते हुए यहां श्रीगणेश कर

दिया। वार्ता को आगे बढ़ाते हुए मुकेश कुमार सिंह ने कहा कि मैं यहां 22 वर्ष से हूं और गुल्लू भाई (गुलाब राय जी) की बात को आगे बढ़ते हुए कहूंगा कि यहां दूसरे धर्मों के आस्था के केंद्र तो थे पर हिंदुओं के लिए ऐसा कोई स्थान नहीं था, जहां हम अपने ईश्वर की आराधना कर सके स दूसरा मेरा मानना रहा है कि हम यहां जापान में पहली भारतीय पीढ़ी के रूप में है, हमारा यह कर्तव्य बनता है कि आगे आने वाली पीढ़ी अपने सनातन धर्म को पहचाने।जैसे भारत में सभी आराध्यों की आराधना की जाती है, यहां भी हों इसी प्रस्ताव को लेकर हम जापान में अन्य जगहों पर भी गए। हमने देखा कि कई भारतीय परिवार ऐसे मिले जहां बच्चे अपने भगवानों से परिचित नहीं थे, उनसे जब पूछा कि गणेश भगवान, कृष्ण भगवान ,महादेव का स्वरूप कैसा है तो वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। उनकी दुविधा देख बाद में सर्वसम्मति से यह तय हुआ कि मंदिर में श्री राम के अतिरिक्त हमारे सभी पूजनीय प्रमुख देवताओं की प्रतिमाएं भी स्थापित होंगी। ऐसे ही हम सब साथ–साथ चलते गए और कारवां बनता गया।जब हमने पूछा कि इतनी बड़ी योजना है, आगे अभी बहुत से कार्य शेष होंगे तो क्या यहां आने वाले व्यक्तियों से भी सहयोग दिया जाता है या स्वयं समिति सभी कार्यों का निर्वहन करती है ? प्रति उत्तर में मुकेश जी ने कहा की सहयोग स्वैच्छिक होता है।उसके भी पूर्व हम समिति पदाधिकारियों का प्रयास होता है कि अधिक से अधिक राशि आपस में स्वयं एकत्र करें। गुल्लू भाई आगे बताते हैं कि मंदिर में जो सजीव दिखने वाली प्रतिमाएं स्थापित हैं वे सभी जयपुर से बुलवाई गई है जो कि बड़े सुरक्षित तरीके से हमारे साथी,संबंधी स्वयं लेकर आए हैं, यह भी ध्यान रखा गया है की प्रतिमाएं खंडित ना हो।इस संबंध में भारत से भी हमारे पास कई फोन आए कि कैसे आप सब ये कर पा रहे हैं ?उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जी ने बात करते हुए हमारी सराहना की, उन्होंने भी यही प्रश्न किया जो आपने किया है कि, कैसे सोचा कि यहां राम मंदिर होना चाहिए ? उन्होंने यह भी पूछा कि किसी तरह की बाधा तो नहीं आई? प्रति उत्तर में हमने कहा– किसी दूसरे देश में अपने धर्म मंदिर को स्थापित करना बड़ी चुनौती थी, पर यहां मेरे 33 वर्षों के व्यवहार और संबंधों ने नैया पर लगाई। ऐसा कहते ही गुल्लू भैया का चेहरा आभा लिए एक गर्व की अनुभूति से चमकता है,वे उन व्यक्तियों के नाम लेते हैं जो उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं– सबसे पहले मुकेश सिंह जो उनके चेयरमैन है फिर राज शर्मा, श्रीकांत, मनोज गौर,और मेरा भतीजा रॉबिन है।मेरा मानना है कि ये सभी वे व्यक्ति है जिनके बिना मेरी पहचान कुछ भी नहीं है। भारत के लोगों के लिए और जो दूसरे देशों में अप्रवासी हैं,क्या अपील करना चाहेंगे ? सहयोग तो अपेक्षित रहेगा, जिस रूप में भी करना चाहें उन्हें बताना चाहेंगे कि यह हमारा पहला कदम ,लेकिन योजना बड़ी है,हमारा विजन यह है कि यहां हम श्रीराम के मंदिर को वही स्वरूप देना चाहेंगे जो अयोध्या में है। भावी योजनाओं में यहां विवाह मंडप,योग केंद्र तथा एक बड़ा वाचनालय स्थापित करना चाहेंगे जहां भारतीय परिवारों के बच्चों के लिए भगवान के सभी अवतारों की जानकारी के साथ वेदों का भी ज्ञान उपलब्ध हो। अंत में गुलाब राय और मुकेश जी प्रणाम करते हुए कह रहे थे – हमारा उद्देश्य भारतीय संस्कृति की जड़ों को यहां कायम रखते हुए उसे पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करना होगा। उनके विश्वास की झलक देख यहां हम किंकर्तव्यविमूढ़ थे भारी मन से मुकेश भाई और गुल्लू भैया से गले मिलते हुए विदा ली,फिर एक बार प्रभु के दर्शन किए,पंडितजी से तिलक लगवा कर हाथ में कलावा(रक्षा सूत्र) बंधवाया और दान पेटी में यथायोग्य राशि अर्पण की। लौटते में वे सज्जन फिर साथ हो लिए जिन्होंने गुलाब राय का परिचय कराया था,चाय की चुस्कियां लेते हुए उन्होंने बताया – गुल्लू भैया भारत के उत्तराखंड राज्य में 100 सेनेटरी पैड की मशीनें स्थापित करने हेतु सहयोग कर रहे है। पहली मशीन का तो शुभारंभ हो चुका है स मेरे मुंह से अचानक निकला– वाह क्या बात, विदेशी धरती से भी देश सेवा की मिसाल कायम की जा सकती है। तभी मेरी नजर मंदिर प्रांगण में नाम पट्टिका के साथ लगाए गए पौधों की ओर गई जो सम्भवतः कुछ वर्षों में पेड़ का रूप धारण करने वाले थे। रावण दहन का समय हो चला था श्रीराम का जयघोष आरंभ हुआ, अब रावण का दमन तो निश्चित था ही पर मैं उस दृश्य को देखकर सोचने लगा जहां ऐसे राम भक्त होंगे वहां रावण को भी फिर जन्म लेने के पूर्व कई बार सोचना पड़ेगा।

नव वर्ष : आत्ममंथन, संकल्प और नवचेतना का पर्व

डॉ. योगिता राठौड़

नव वर्ष केवल कैलेंडर का बदलना नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन में आशा, उत्साह और नवचेतना के संचार का प्रतीक है। जैसे ही पुराना वर्ष विदा लेता है, उसके साथ बीते अनुभव, सफलताएँ, असफलताएँ, सीख और स्मृतियाँ भी हमारे मन में सहेज ली जाती हैं। नया वर्ष हमें एक नई शुरुआत का अवसर देता हैकृअपने अतीत का मूल्यांकन करने, वर्तमान को समझने और भविष्य को संवारने का। यही कारण है कि नव वर्ष को केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन और संकल्प का पर्व कहा जाता है।

वर्तमान समय में नव वर्ष का महत्व और भी बढ़ गया है। आज का मानव तेजी से बदलती जीवनशैली, तकनीकी प्रगति, सामाजिक चुनौतियों और वैश्विक अस्थिरताओं के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में नया वर्ष हमें रुककर सोचने का अवसर देता है कि हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं। क्या हमारी प्रगति केवल भौतिक सुखों तक सीमित है, या हम मानवीय मूल्यों, सामाजिक समरसता और पर्यावरण संतुलन को भी समान महत्व दे रहे हैं?

नव वर्ष का पहला संदेश होता हैकृआशा। निराशा और असफलता चाहे जितनी गहरी क्यों न हो, नया वर्ष यह विश्वास जगाता है कि परिवर्तन संभव है। यही आशा व्यक्ति को फिर से खड़े होने, नए लक्ष्य तय करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। विद्यार्थी हों या कर्मचारी, किसान हों या उद्यमीकृनव वर्ष सभी के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलता है।

नव वर्ष का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है–आत्ममंथन। बीते वर्ष में हमने क्या खोया और क्या पाया, यह प्रश्न स्वयं से पूछना आवश्यक है। आत्ममंथन के बिना संकल्प केवल औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। हमें यह देखना होगा कि हमारे विचार, व्यवहार और कर्म समाज व राष्ट्र के लिए कितने उपयोगी रहे। क्या हमने केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति की, या समाज के कमजोर वर्गों के लिए भी कुछ किया? आत्ममंथन ही हमें बेहतर इंसान बनने की दिशा में ले जाता है।

नव वर्ष संकल्पों का समय भी है। प्रायः लोग स्वास्थ्य सुधारने, समय का सदुपयोग करने, बुरी आदतें छोड़ने या करियर में आगे बढ़ने के संकल्प लेते हैं। किंतु संकल्प तभी सार्थक होते हैं जब वे व्यवहार में उतरें। आज आवश्यकता है कि व्यक्तिगत संकल्पों के साथ–साथ सामाजिक और नैतिक संकल्प भी लिए जाएँ–जैसे पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, ईमानदारी, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान। छोटे–छोटे संकल्प यदि ईमानदारी से निभाए जाएँ, तो वे बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं।

नव वर्ष का सामाजिक संदर्भ भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज समाज अनेक चुनौतियों से जूझ रहा हैकृआर्थिक विषमता, बेरोजगारी, तनाव, हिंसा और नैतिक मूल्यों का क्षरण। ऐसे में नया वर्ष हमें सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को मजबूत करने का संदेश देता है। हमें यह समझना होगा कि व्यक्तिगत सुख तभी स्थायी हो सकता है, जब समाज समृद्ध और संतुलित हो।

पर्यावरण के दृष्टिकोण से भी नव वर्ष विशेष महत्व रखता है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। नया वर्ष हमें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध कराता है। जल संरक्षण, वृक्षारोपण, ऊर्जा की बचत और प्लास्टिक के कम उपयोग जैसे छोटे कदम बड़े पर्यावरणीय संकट को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

शिक्षा और युवाओं के संदर्भ में नव वर्ष नई ऊर्जा का संचार करता है। युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होता है। नया वर्ष युवाओं को सकारात्मक सोच, रचनात्मकता और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार पाना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी होना चाहिए।

नव वर्ष का सांस्कृतिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। भारत जैसे देश में नव वर्ष विभिन्न रूपों में मनाया जाता हैकृचैत्र प्रतिपदा, बैसाखी, उगादी, गुड़ी पड़वा आदि। यह विविधता हमारी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। नव वर्ष हमें अपनी परंपराओं, संस्कारों और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ने का अवसर देता है, ताकि आधुनिकता के साथ–साथ अपनी जड़ों को भी मजबूत रखा जा सके।

अंततः नव वर्ष का वास्तविक अर्थ तभी साकार होता है, जब हम इसे केवल उत्सव तक सीमित न रखें। आतिशबाजी, पार्टियाँ और शुभकामनाएँ क्षणिक आनंद दे सकती हैं, किंतु स्थायी सुख और संतोष कर्म, करुणा और कर्तव्य से ही प्राप्त होता है। नया वर्ष हमें यही सिखाता है कि परिवर्तन बाहर से नहीं, भीतर से शुरू होता है।

निष्कर्षतः नववर्ष एक नई शुरुआत का प्रतीक हैकृआशा, संकल्प और नवचेतना का संदेश लेकर आता हुआ। यदि हम आत्ममंथन के साथ ठोस संकल्प लें, सामाजिक और नैतिक मूल्यों को अपनाएँ तथा प्रकृति और मानवता के प्रति अपने दायित्व को समझें, तो निश्चित ही नया वर्ष न केवल हमारे जीवन को, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र को एक नई दिशा दे सकता है। यही नववर्ष की सच्ची शुभकामना और सार्थकता है।

(लेखक के ये अपने विचार हैं।)

प्राचार्य, माँ नर्मदा कॉलेज ऑफ एजुकेशन धामनोद

युवा शक्ति से विकसित भारत की ओर

देशना जैन

12 जनवरी का दिन भारत के लिए विशेष महत्व रखता है। यह दिन न केवल स्वामी विवेकानंद की जयंती है, बल्कि पूरे देश में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1984 में भारत सरकार ने इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस घोषित किया और 1985 से इसे नियमित रूप से मनाया जा रहा है। स्वामी विवेकानंद के विचारों और आदर्शों को ध्यान में रखते हुए यह दिवस युवाओं को प्रेरित करने, उनके अंदर छिपी अनंत शक्ति को जागृत करने और राष्ट्र निर्माण में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है।

वर्तमान समय में, वर्ष 2026 में राष्ट्रीय युवा दिवस की थीम विभिन्न स्रोतों में 'उठो, जागो और अपनी शक्ति को पहचानो' के साथ–साथ 'अपने आप को पहचानों और दुनिया पर प्रभाव डालो' जैसी दिखाई दे रही है। ये दोनों ही स्वामी विवेकानंद के मूल संदेश हैं। यह थीम आज के युवाओं को आत्म–जागरण, आंतरिक शक्ति की खोज और विश्व स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डालने की प्रेरणा देती है।

स्वामी विवेकानंद (जन्मः 12 जनवरी 1863, कोलकाता) का जीवन मात्र 39 वर्षों का था, लेकिन उनके विचारों की गहराई और प्रभाव आज भी अमर है। वे रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे और वेदांत दर्शन को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने वाले पहले भारतीय संत थे। 1893 में शिकागो विश्व धर्म संसद में उनका ऐतिहासिक भाषण सिस्टर एंड ब्रदर ऑफ अमेरिका ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया। उन्होंने कहा था कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाने वाली अलग–अलग राहें हैं, जैसे विभिन्न नदियाँ एक ही समुद्र में मिलती हैं। स्वामी विवेकानंद युवाओं को 'शक्ति' का प्रतीक मानते थे। उनका मानना था कि युवा ही राष्ट्र का भविष्य हैं। वे कहते थे– उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।', मेरे युवा मित्रों, तुममें अनंत शक्ति है।, शरीर में बल हो, मन में साहस हो, तो कुछ भी असंभव नहीं। वे शिक्षा को मात्र किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण मानते थे। उन्होंने

कहा, षशिक्षा वह है जो मनुष्य को स्वतंत्र बनाती है, साहसी बनाती है और सेवा के लिए प्रेरित करती है। आज के डिजिटल युग में युवा अक्सर तनाव, डर और असफलता से जूझते हैं। विवेकानंद का संदेश आज भी प्रासंगिक हैकृडरना पाप है, असफलता सीढ़ी है, और सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।

राष्ट्रीय युवा दिवस का उद्देश्य युवाओं में स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को स्थापित करना है। यह दिन केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन, संकल्प और कार्य का दिन है। 1984 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित होने के बाद भारत ने इसे अपनाया। तब से हर साल 12 जनवरी को स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और सामाजिक संगठनों में व्याख्यान, सेमिनार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद और सामूहिक सूर्य नमस्कार जैसे आयोजन होते हैं।

वर्ष 2026 में यह दिवस विशेष महत्व रखता है क्योंकि भारत विकसित भारत/2047 के संकल्प की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। हाल ही में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026 का आयोजन 9 से 12 जनवरी तक हुआ, जिसमें 50 लाख से अधिक युवाओं ने भाग लिया। प्रधानमंत्री इस डायलॉग के समापन सत्र में शामिल हुए, जहां युवा नेताओं ने नवाचार, फिटनेस, स्टार्टअप, कृषि जैसे विषयों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। यह दिखाता है कि युवा अब सिर्फ सपने नहीं देख रहे, बल्कि उन सपनों को हकीकत में बदलने के लिए तैयार हैं।

आज का भारतीय युवा दुनिया के सबसे बड़े युवा समूह का हिस्सा है। 65 प्रतिशत से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। लेकिन चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं, बेरोजगारी, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, सोशल मीडिया का दबाव, पर्यावरण संकट, असमानता और ड्रग्स जैसी कुरीतियाँ। फिर भी अवसर अनंत हैं। स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया जैसे कार्यक्रम युवाओं को सशक्त बना रहे हैं। युवा अब वैश्विक स्तर पर एआई, ब्लॉकचेन, रिन्यूएबल एनर्जी, स्पेस टेक्नोलॉजी और सस्टेनेबल डेवलपमेंट में योगदान दे रहे हैं। स्वामी विवेकानंद की तरह युवाओं को अपनी आंतरिक शक्ति पर विश्वास करना होगा।

युवाओं के लिए विवेकानंद की शिक्षाएँ आज के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है। वे कहते है डरना मत, क्योंकि तुममें ब्रह्म की शक्ति है। आज के युवा असफलता से डरते हैं, लेकिन विवेकानंद सिखाते हैं कि असफलता सफलता की पहली सीढ़ी है। शरीर में बल हो तो मन में बल आएगा। योग, ध्यान और व्यायाम आज की सबसे बड़ी जरूरत हैं। दारिद्र्य नारायण की सेवा करो। युवा एनजीओ, वॉलंटियरिंग और सामाजिक कार्यों में सक्रिय हो रहे हैं। शिक्षा केवल डिग्री नहीं, बल्कि जीवन मूल्य सिखाने वाली होनी चाहिए। विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर स्थापित किया। आज युवा ग्लोबल सिटिजन बनकर भारत का नाम रोशन कर रहे हैं।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर हमें सिर्फ भाषण सुनने नहीं, बल्कि संकल्प लेने चाहिए। खुद को विकसित करें–नई स्किल सीखें, किताबें पढ़ें। समाज की सेवा करें–पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा प्रसार, स्वास्थ्य जागरूकता। नशा मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा लें। एक–दूसरे को प्रेरित करें, नेगेटिविटी से दूर रहें। विकसित भारत का सपना युवाओं के बिना पूरा नहीं हो सकता। जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा है, युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा और नेतृत्व ही विकसित भारत 2047 की सशक्त नींव है।

राष्ट्रीय युवा दिवस 2026 हमें याद दिलाता है कि भारत का भविष्य हमारे हाथों में है। स्वामी विवेकानंद की जयंती पर हम उनके उस संदेश को दोहराते हैं,युवा ही वह शक्ति हैं जो राष्ट्र को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकती है। आइए, इस दिन एक नया संकल्प लें, उठो, जागो, अपनी शक्ति पहचानो और दुनिया पर प्रभाव डालो। युवा शक्ति से ही भारत विश्व गुरु बनेगा। हम सब मिलकर एक मजबूत, समृद्ध और समावेशी भारत का निर्माण करेंगे।

(लेखक के ये अपने विचार हैं।)

ए–99 विक्रमादित्य क्लॉथ मार्केट, उज्जैन, 456006 (म.प्र.)

मो– 7440302520

हमारा संविधान और मन की बात

प्रकाश श्रीवास्तव

भारत का संविधान दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है, जिसमें मूल रूप से 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियाँ थीं (अब 448 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियाँ हैं) इसमें अमेरिका (मौलिक अधिकार), आयरलैंड (नीति निर्देशक सिद्धांत), ब्रिटेन (संसदीय प्रणाली), और रूस (मौलिक कर्तव्य) जैसे देशों के संविधानों के तत्व शामिल हैं। डॉ. बी.आर. अंबेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष और संविधान के मुख्य निर्माता थे उन्होंने 60 देशों के संविधान का अध्ययन करने के पश्चात इसका मसौदा तैयार किया था। सर बी.एन. राव संविधान के संवैधानिक सलाहकार थे जिन्होंने 1935 के भारत अधिनियम का मसौदा तैयार किया और नीति निर्देशक तत्वों की अवधारणा दी। जानने योग्य बात यह है कि यह संविधान पूरी तरह हस्त लिखित है, जिसे कैलीग्राफी के एक्सपर्ट श्री प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने हिंदी और इंग्लिश दोनों में लिखा था उन्होंने विशेष रूप से इंग्लैंड से मंगाई गई पेन होल्डर निब छव. 303 का उपयोग किया था। इस काम में लगभग 6 महीने लगे और इसमें कुल 432 निब का इस्तेमाल हुआ था। इसके लिए श्री रायजादा ने मेहनताना लेने से मना कर दिया, लेकिन शर्त रखी कि संविधान के हर पेज पर अपने हस्ताक्षर करेंगे और अंतिम पृष्ठ पर अपने नाम के साथ अपने दादा श्री राम प्रसाद जी का भी नाम लिखेंगे। इसके हर पृष्ठ को शांति निकेतन के कलाकारों श्री नंदलाल बोस और राम मनोहर सिन्हा ने बहुत सुंदरता से सजाया था। हमारे संविधान को एक ष्जीवित दस्तावेजष भी कहा जाता है क्योंकि इसमें समय के साथ संशोधन किए जा सकते हैं। संविधान की मूल प्रतियों को हीलियम गैस से भरे बक्सों में संसद पुस्तकालय में रखा गया है। अब यह सारी जानकारी तो हमारे सामान्य ज्ञान की वृद्धि में सहायक है, लेकिन जब संविधान शब्द पर पहली बार मेरा ध्यान गया था तब कॉलेज में था, मैं मानता था कि यह सम–विधान है अर्थात वह विधान जो सभी के लिए समान है, या यूं कहें कि जो लोक इस लोकतंत्र में समाहित हैं उनके लिए बनी हुई यह नियमावली सभी नागरिकों के लिए समान विचार और व्यवहार को समाविष्ट कर रची गई है। लेकिन जब थोड़े और विचारशील हुए कॉलेज से निकल कर काम तलाशने निकले तो पता लगा कि उसी संविधान में समाज के कई टुकड़े हैं जैसे एस सी, एस टी, अगड़े, पिछड़े अल्प संख्यक बहु संख्यक इत्यादि इत्यादि, जिन्हें अलग अलग कारणों से अलग तरीके से परिभाषित कर समाज की मुख्यधारा में मिलाने के प्रयास किए गए जिनके नाम पर राजनैतिक खेल खेले जा रहे हैं और जिसका खामियाजा सिर्फ वो भुगत रहे हैं जो अपनी पूरी योग्यता को झोंक कर भी आरक्षण के अयोग्य वीरों के हाथों परास्त हो कर हतोत्साहित हो चुके हैं, और अब जब अपनी शैक्षणिक योग्यता को वोटों की दलाली की भेंट चढ़ा कर बालों में चांदी ले कर बैठा हूं तब समझ आया कि ये तो संस्कृत के सम्यक अर्थात पूरी तरह से लिया गया शब्द ष्समष है जो 77 वर्ष पूर्व की व्यवस्थाओं, समस्याओं और आवश्यकताओं के मद्देनजर बनाए गए विधान के साथ जोड़ कर जो शब्द गढ़ा वो है हमारा संविधान। इस संविधान के मसौदे को तैयार करने वाले बाबा साहब ने 60 देशों के संविधान का अध्ययन करने के बाद इसको पूर्ण किया था, लेकिन वो सब भी 77 वर्ष पूर्व की उन देशों की परिस्थितियों, विचारों और व्यवहारों से प्रभावित ही होगा। उस समय तो मान लिया गया होगा कि इस भारी भरकम संविधान की वजह से सारा समाज दो पांच या दस साल में इस स्थान पर होगा जहां सभी समान नागरिक होंगे अधिकारों के साथ साथ पूर्ण कर्तव्य बोध के साथ खड़े होंगे। परंतु 77 साल बाद तो खाईयां और भी गहरी हैं, कर्तव्य बोध तो गर्मी की घास की तरह सूख गया है, देश वस्तु हो गया है जिसे राजनीतिक पार्टियां अपने हिसाब से उपयोग कर रही हैं, राष्ट्रवाद परिभाषाओं में सिमट गया है। संविधान अब सिर्फ आरक्षितों की ढाल और राजनीतिज्ञों की चाल बनकर खुद बेहाल हो कर रह गया है। अब जरूरत है समर्थ राजनेताओं की जो संविधान का वर्तमान परिप्रेक्ष्य, परिदृश्य, समस्याओं, व्यवस्थाओं और व्यवहार के मद्देनजर पुनर्निमाण करें। इसके लिए आवश्यकता है ईमानदार सरकारों और जीवित विपक्ष की।

लेखक के ये अपने विचार हैं।

सम्पर्क : अमरनाथ कॉलोनी, कोलार रोड, भोपाल

इतना सहज प्रस्थान...! हमसे होगा क्या... ?

डॉ. मुकुंद फाटक

मेरे घर के नजदीक एक पुराना घर तोड़कर नया घर बनना प्रारंभ हुआ। सारा मलवा हटाने के बाद प्लॉट की साफ सफाई की गई। एक दिन अचानक मैंने देखा की एक पति पत्नी छोटे से दो बच्चों को लेकर, एक गोद में और एक पैदल चलने वाला उस साइट पर पहुंचे। साथ में दो–तीन पुरानी सीमेंट की बोरियों में कुछ गृहस्ती का सामान भी था। आते ही उस महिला ने सड़क पर स्थित एक पुराने आम के पेड़ में अपनी साड़ी से एक झूला बांधा और उसमें गोद के बच्चे को लिटा कर साफ सफाई में लग गई। इतने में कुछ बांस, बलिया, गैती, फायदा, तगाड़ी, रेत और चूने की बोरियां ठेकेदार ने वहां लाकर पटकी। उन्ही में से कुछ बिल्लियों को छांटकर दोनों पति–पत्नी ने चार बल्लियां गाड़कर कुछ पुराने टीन छत पर डाले और साइड में ईंटें जमाने में लग गए। शाम तक उनका यह सपनों का आशियाना तन गया । उन्ही बांस बल्लियों में से और इर्द–गिर्द फैली हुई कुछ सुखी लकड़ियों को एक कोने में तीन ईंटों के बीच जमा कर उसने चूल्हा जलाया और सीमेंट की बोरी में भरे हुए चंद बर्तनों में से कुछ बर्तनों और समान का उपयोग कर खाना बनाने में जुट गई। देखते ही देखते चंद घंटों में ही उनकी गृहस्थी जम गई।

साइट पर धीरे–धीरे काम ने गति पकड़ी और देखते ही देखते नीव की खुदाई से लेकर छत डालने तक का काम संपन्न हो गया। इसी दौरान बरसात का मौसम आया और उस दंपति ने अपना वह कच्चा आशियाना तोड़कर नई डाली हुई छत के नीचे शरण ली। मैं कई बार वहां से गुजरते हुए कौतूहल वश खड़ा होकर काम को देखाता था। यह दोनों पति–पत्नी भी साइट पर चौकीदारी करने के साथ–साथ दिन में मजदूरी भी करते थे। कितनी मेहनत करते थे बेचारे अपना पेट पालने के लिए, खैर। उनके बच्चे भी धीरे–धीरे इस रेत और मिट्टी में खेलते हुए बड़े होने लगे। इसी दरमियान सड़क पर एक कुतिया ने बच्चे दिए। जैसे ही वह बच्चे थोड़े बड़े हुए इस चौकीदार के बच्चे उन बच्चों के साथ घुल मिलकर खेलने लगे। कभी उनको उठाकर सिर पर रख लेते तो कभी उनके गले में रस्सी बांधकर घूमते रहते, मानो यही उनके जीवंत खिलौने हों। काम के दौरान ही उस चौकीदार के हाथ में चोट भी लगी। अब उन्हें यहां रहते हुए लगभग तीन–चार महीने हो गए थे। लिहाजा पड़ोसियों से भी उनके संबंध बनने लगे थे। किसी के घर से वह पीने का पानी भरते तो किसी के द्वारा दिए गए गर्म कपड़े आदि का उपयोग कर अपनी जरूरत को पूरा करते। कोई उन्हें आर्थिक मदद करता तो कोई कभी उन बच्चों को खाने पीने के लिए ब्रेड बिस्किट लाकर देता।

वह चौकीदार स्वभाव से ज्यादा बातूनी नहीं था परंतु उसकी पत्नी आए दिन लोगों से बात करती। आस पड़ोस के घरों में काम करने वाली बाईयां भी उस निर्माणाधीन मकान की साइट पर जाकर नियमित रूप से बैठकर उस महिला से इधर–उधर की बातें करती। हमारे घर काम करने वाली बाई भी कभी–कभी उस परिवार की कुछ जानकारी हमसे साझा किया करती थी। मैंने देखा कि किस प्रकार छह महीने पहले आए हुए परिवार के

सामाजिक संबंध दिन प्रतिदिन बनते जा रहे थे। देखते ही देखते मकान का काम समाप्ति की ओर बढ़ने लगा। कभी मकान पर काम करने के लिए इलेक्ट्रिशियन आता तो कभी प्लंबर, कभी कारपेंटर आकर दरवाजे खिड़कियां बनाता तो कभी पुताई वाले आकर अपना काम करते परंतु यह दंपति नियमित रूप से पहले दिन से इस मकान के काम में बड़ी शिद्दत के साथ लगे हुए थे। अब मकान पूरा हो गया रंगाई पुताई, बाउंड्री वॉल यहां तक की सामने आंगन में थोड़ी मिट्टी डालकर उसमें छोटा सा बगीचा भी लगाने का काम माली ने चालू कर दिया। पुराने घर की अपेक्षा बहुत ही सुंदर बंगला बनकर तैयार था। अब मोहल्ले में भी उसके उद्घाटन की संभावित तिथि के बारे में चर्चा होने लगी।

अचानक एक दिन मैंने देखा कि उस नए बने बंगले के सामने एक ट्रक आकर खड़ा हुआ। उसमें निर्माण से संबंधित कुछ बचा हुआ सामान और औजार रखने के बाद वह चौकीदार दंपति अपने दोनों बेटों के साथ सवार हुए और ट्रक रवाना हुआ। जैसे ही मेरे घर के सामने से ट्रक निकला, मैंने दरवाजे पर जाकर ट्रक को रुकने का इशारा किया, उस दंपति ने मेरे चेहरे को बखूबी पढ़ लिया और जोर से चिल्ला कर बोले हमारा यहां का दानापानी समाप्त हो गया साहब। एक क्षण मेरे लिए यह धक्का दायक बात थी, क्योंकि अब हम लोगों को भी उनकी आदत सी हो गई थी। मैंने पूछा ऐसे अचानक कहां जा रहे हो ...? उन्होंने जवाब दिया ठेकेदार का संदेशा आया है नई साइट पर काम शुरू होने वाला है अब हमारी जरूरत वहां ज्यादा है, इतना कहते कहते हाथ हिलाते हुए वह दंपति मेरी आंखों से ओझल हो गए और मैं एक टक ट्रक की दिशा में देखता रहा....!

पेशे से मैं भी सिविल इंजीनियर होने के कारण मेरे मन में यह ख्याल हमेशा आता है कि सिविल इंजीनियरिंग और उससे जुड़े हुए सभी लोग किसी भी निर्माण स्थल पर तब तक ही रह पाते हैं जब तक कि वह पूरी तरह बनकर तैयार और आबाद ना हो जाए। उसके बाद तो उस भवन का उपयोग करने वाला कोई दूसरा ही व्यक्ति होता है।

किसी मेहनती पक्षी के जोड़े की तरह दोनों ने तिनका तिनका चुनकर यह आशियाना बनाया। एक साल वे यहां रहे उनका परिवार यहां फला फूला, बच्चे बड़े हुए और एक दिन अचानक इस माया मोह में न पड़ते हुए सबकुछ छोड़कर कितने सहज तरीके से यहां से निकल गए।

कितनी मेहनत से उन्होंने यह घर बनाया पर वह भी दूसरे के लिए। क्या कभी उनको नहीं लगता होगा कि उनका भी अपना एक आशियाना हो.... ? कितने सहज तरीके से किसी दूसरे आशियाने की साइट पर, किसी दूसरे का आशियाना बनाने के लिए निकल पड़ा वह परिवार।

मैं ऐसे ही बैठे–बैठे सोचता रह गया .....

की क्या इन लोगों ने अपने से ज्यादा अच्छी तरह से जीवन जीने की कला नहीं सीखी है....?

अगर देखे तो क्या हम सबको भी एक दिन इसी तरह इतनी सहजता से सब कुछ छोड़ कर नहीं जाना है.?

जीवन भर जितनी कमाई की, चीजें जुटाई, उनको जमाया, यह मेरा यह तेरा किया और सब यही छोड़ कर चले जाना है...., हैं न......!

यूं तो जैसे इस परिवार को ठेकेदार का संदेश मिला कि अगली साइट पर जाना है, वैसे ही जब हमें नीली छतरी वाले का संदेश आए तो हम एक क्षण भी अपने आशियाने में नहीं रह पाएंगे। एक सांस भी ज्यादा नहीं ले पाएंगे।

सबको तो जाना ही है.....,पर क्या जाने से पहले हम किसी दूसरे का आशियाना बनाकर, उसे सजा कर उस चौकीदार के परिवार की तरह बिना उसका हिस्सा बने सब कुछ छोड़कर जा पाएंगे, यह विचारणीय बिंदु है...!

सम्पर्क : भोपाल
मो. : 9584216075

एक मुलाकात

गोवर्धन यादव

अंतिम सप्ताह दिसंबर का चल रहा है। चार दिन की केजुअल बाकी है। यदि जेब में मनीराम होते तो मजा आ जाता। दोस्तों की ओर से भी तरह–तरह के प्रस्ताव मिल रहे थे। परंतु सभी को कोई न कोई बहाना बनाकर टाल देता हूं, बिना पैसों के किया भी क्या जा सकता था। अतरू आफिस से चिपके रहकर समय पास करना ही श्रेयस्कर लगा।

31 दिसम्बर का दिन, पहाड़ जैसा कट तो गया पर शाम एवं रात्री कैसे कटेगी यह सोचकर दिल घबराने–सा लगा। उडने को घायल पंछी जैसी मेरी हालत हो रही थी। अनमना जानकर पत्नी ने कुछ पूछने की हिम्मत की, पर ठीक नहीं लग रहा है, कहकर मैं उसे टाल गया।

खाना खाने बैठा तो खाया नहीं गया। थाली सरका कर हाथ धोया। मुंह में सुपारी का कतरा डाला। थोड़ा घूम कर आता हूं, कहकर घर के बाहर निकल गया।

ठंड अपने शबाब पर थी। दोनों हाथ पतलून की जेब में कुनकुना कर रहे थे। तभी उंगलियों के पोर से

कुछ सिक्के टकराए। अंदर ही अंदर उन्हें गिनने का प्रयास करता हूं एक सिक्का और दो चवन्नियां भर जेब में पड़ी थीं। सोचा एक पान और एक सिगरेट का सेजा जम जायेगा। पान के ठेले पर चिर–परिचितों को पाकर आगे बढ़ जाता हूं। दूसरे पान के ठेले पर भी यही नजारा था। एक के बाद एक पान के ठेलों को पीछे छोड़ता हुआ काफी दूर चला आया था।

उद्विग्न मन लिये, मैं सड़क के किनारे–किनारे चला जा रहा था। तभी मैंने महसूस किया कि कोई व्हीकल मेरे पीछे आ रही है। तनिक पलट कर देखा। एक चमचमाती जेन ठीक मेरे पीछे रेंग रही थी। मैं और थोड़ा हटकर चलने लगता हूं कि वह आगे निकल जाए, पर अब वह मुझसे सटकर चलने लगी।

सहसा गाड़ी में से एक हाथ निकलता है और मेरी कलाई को मजबूती से थाम लेता है। इस अप्रत्याशित घटना से मैं हड़बड़ा जाता हूं। मेरी पेशानी पर पसीना चू उठता है। मैं कुछ समझं इससे पूर्व ही वह दरवाजा खोलकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसका इस तरह ऐंठकर खड़ा हो जाना मुझे ड्रेकुला की तरह लगा। मैं अंदर ही अंदर बुरी तरह से कांप उठा। उसने बड़ी बेतकल्लुफी से मेरे कंधे पर अपने भारी भरकम हाथ की धौंस जमाते हुए कहा, क्यों... क्या हालचाल हैं। उसकी कड़कदार आवाज सुनकर मेरी तो जैसे घिग्गी ही बंध गई थी। कुछ कहना चाह भी रहा था, परंतु जीभ जैसे तालू से चिपक गई थी और शब्द आकर गले में फंस गए थे। मेरी आंखें बराबर देख रही थीं। वह मंद–मंद मुस्करा रहा था। उसकी यह मुस्कान मुझे बड़ी वीभत्स सी लग रही थी।

प्रत्युत्तर न पाकर, उसने फिर वही प्रश्न दागा। कड़ाके की ठंड में मैं पसीना–पसीना हुआ जा रहा था। आंखें पथरा–सी गई थीं और सोचने– समझने की शक्ति एकदम गायब हो गई थी। मैं बुत बना उसके सामने खड़ा था।

श्अरे यार, तेरा तो नर्वस ब्रेक डाउन हो गया लगता है, मैं कोई भूत–वूत नहीं बल्कि तेरे बचपन का दोस्त हूं। बरसों–बरस बाद तू मुझे दिखाई दिया सो सोचा कि कुछ सरप्राईज दूंगा, गौर से मेरी तरफ देख तो सही।

उसके शब्दों में अब आत्मीयता की खुश्बू आ रही थी, जिसने संजीवनी का काम किया। मैं अब होश में आने लगा था, बल्कि अब नॉर्मल हो गया था। मैंने उसके चेहरे को पहचानने की कोशिश की पर असफलता ही हाथ लगी। पहचान लायक कोई भी अवशेष उसके चेहरे पर नजर नहीं आ रहे थे। एक हारे हुए जुआरी की तरह मेरी हालत हो गई थी।

वेरी सॉरी यार, मैं तुझे सचमुच नहीं पहचान पाया। मैंने बिना किसी लाग–लपेट के अपनी असमर्थता उस पर प्रकट कर दी।

हां यार मुझे बड़ी हैरानी हो रही है कि तू मुझे पहचान नहीं पाया। सुन, तेरे बारे में मैं सब कुछ बताता हूं। तेरा नाम गोवर्धन यादव है न? तू मुलताई का रहने वाला है न? तुम डाक विभाग में कार्य करते हो न? तुमने छिन्दवाड़ा में अपना मकान बना लिया है न? उसने और भी ढेरों बातें मेरे बारे में बतलाईं। उसने सचमुच ही मेरा सारा कच्चा चिठ्ठा खोलकर रख दिया था। निश्चित ही वह मेरा पूर्व परिचित रहा होगा। तभी तो उसने इतनी सारी बातें मेरे बारे में बतलाईं। इतना सब कुछ घटित होने के बाद भी मैं उसे पहचान नहीं पा रहा था। मेरी नजरें झुक आईं और निराशा का भाव मेरे चेहरे पर उतर आया था। उसने मुझे भरपूर नजरों से घूरा और जोरदार ठहाका लगाया। और मुझ से कहने लगा, अरे यार, इसमें इतना परेशान होने कि क्या बात है। अब तुम पूरे समय मेरे साथ रहोगे। तुम खुद–ब–खुद मुझे जान जाओगे। फिर भी यदि नहीं पहचान पाओगे तो मैं तुम्हें खुद ही अपने बारे में बता दूंगा। चल आ बैठ। उसने शालीनता से कार का दरवाजा खोला। मैं यंत्रवत्ङ्क गाड़ी में जा धंसा। गाड़ी का स्टेयरिंग सम्हालते हुए अपने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं एक सिगरेट ले लेता हूं। उसने भी एक सिगरेट अपने ओठों से दबाते हुए लाईटर जलाया। लाईटर के जलते ही एक जल–तरंग की आवाज थिरकने लगती है। सिगरेट जलाते हुए मैंने एक लंबा कश खींचा। तब तक वह गाड़ी स्टार्ट कर चुका था।

गाड़ी अब एक आलशीन बगीचे में से होते हुए गुजर रही थी। जगह–जगह फव्वारे रंग–बिरंगी रोशनी में थिरक रहे थे। बगीचे में लाईटिंग भी बड़े करीने से की गई थी। तभी कार एक आलीशान महल के सामने जाकर रुकती है। वह हार्न बजाता है। एक सूटेड–बूटेड वाचमैन आकर कार का दरवाजा खोलता है। वह कार के बाहर

आ जाता है। उसके बाहर आते ही वाचमैन ने जोरदार सैल्यूट मारा। अब वह आगे बढने लगता है। वाचमैन ने आगे बढ़कर कांच का आदमकद दरवाजा खोला। अब वह अन्दर प्रवेश करने लगता है। मैं यंत्रवत्ड्ढ उसके पीछे हो लेता हूं। अंदर पहुंचते ही मुझे ऐसा लगा कि मैं जन्नत में आ गया हूं, जगह–जगह कलात्मक पेंटिंग्स लगी हुई थीं। झाड़–फानूसों से रोशनी बिखर रही थी। दीवारों से सटकर आदमकद अप्सराओं की नग्न–अर्धनग्न मूर्तियां मादकता बिखेर रही थी पूरे फर्श पर बेशकीमती कालीन बिछा हुआ था। हॉल में हल्की गुलाबी–सी रोशनी छाई थी। हर एक टेबल पर प्रेमी–प्रेमिकाएं अस्त–व्यस्त मुद्राओं में बैठे चियर्स कर रहे थे। हल्की धीमी आवाज में कोई इंगलिश–टयूनिंग माहौल में उत्तेजना भर रही थी। कई जोड़े डांसिंग फ्लोर पर एक दूसरे की कमर में हाथ डाले थिरक रहे थे। एक जवान बाला थिरकती जाती थी और खाली होते पैमानों को भरती जा रही थी।

अब वह इठलाती, बलखाती मेरी ओर बढ़ी चली आ रही थी। आगे बढ़कर उसने गिलास मेरे ओठों से लगा दिया। उसके अपने चेहरे पर चिपकी मुस्कुराहट, अस्त–व्यस्त कपड़ों से झांकते गदराए यौवन ने मेरे अंदर एक सनसनी सी पैदा कर दी। मैंने उसके नाजुक हाथों से गिलास ले लिया और एक ही सांस में पूरा उतार लिया। वह एक के बाद एक गिलास मेरी ओर बढ़ाती चली गई। मुझे बिल्कुल ही नहीं मालूम कि मैं कितने गिलास चढ़ा चुका होऊंगा। अब उसने मेरा हाथ थाम लिया और अब वह डांसिंग फ्लोर की ओर बढने लग जाती है। डांसिंग फ्लोर पर मैं न जाने कब तक डांस करता रहा। मुझे याद नहीं और न ही वह कथित मित्र मुझे याद आया।

सहसा माईक पर एक स्वर उभरता है। लेडीज एण्ड जेन्टलमैन, थिरकते हुए जोड़े थम जाते हैं। प्रायरू सभी की निगाहें डायस की ओर मुड़ जाती हैं। वह कोई और नहीं मेरा अपना कथित मित्र था। फ्लैश लाइट में वह हीरे का सा जगमगा रहा था। उसने मौन भंग करते हुए मेरा नाम लेकर पुकारा और कहा कि मैं डायस पर पहुंच जाऊं। बहके हुए कदमों से मैं वहां पहुंच जाता हूं।

बड़े मनोहारिक तरीके से उसने मेरा परिचय दिया। कहा, दोस्तों... आप इन्हें नहीं जानते। ये एक अच्छे गीतकार हैं, तथा गायक भी हैं। इनके अंदर एक से बढ़कर एक अनमोल खजाने छुपे हुए हैं और जब ये गाते हैं तो लगता है कि कोई झरना आकाश से उतर रहा हो और मीठी स्वर लहरी बिखेर रहा हो पर... ? अचानक उसकी सूई पर' पर अटक जाती है। लोग अपनी सांसों को रोककर आगे कुछ सुनना चाह रहे हैं। पर वह एक लंबी चुप्पी साध लेता है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने कहा, हां तो दोस्तों मैं तो इनके बारे में एक चीज बतलाना तो भूल ही गया। जानते हैं, इनकी जेब में अब भी एक सिक्का और दो चवन्नियां पड़ी हैं। वर्ष के अंतिम दिन, ये बेचारे जश्न नहीं मना पा रहे थे। रास्ते में इनसे अनायास ही मुलाकात हो गई और मैं इन्हें यहां उठा लाया। शायद मैंने ठीक किया वरना आज महफिल बिना गीत–संगीत के सूनी–सूनी सी लगती।

उसके उद्ड्ढबोधन को सुनकर मेरा सारा नशा जाता रहा। मुझे ऐसा लगा जैसे स्वर्ग से उठा कर धरती पर फेंक दिया गया होऊं। अपने आप को संयत करते हुए मैंने माईक सम्हाला और कहा, श्मित्रों, मैं अभी तक इस व्यक्ति को नहीं जान पाया जो मुझे उठाकर यहां लाया। इन्होंने अपनी ओर से दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। और मैंने इन्हें एक विश्वास के साथ गले लगाया था। यह घटना ज्यादा पुरानी नहीं है अपितु चंद घंटों पहले की है। इन्होंने दोस्ती को ऐसे झटक दिया जैसे धूल पडने पर आदमी अपने कपड़े झाडने लगता है। अब मैं इन्हें दोस्त कहूं या दुश्मन। खैर जो भी हो, इन्होंने एक विश्वास तोड़ा है, एक दिल तोड़ा है और जब दिल टूटता है तो एक दर्द भरा गीत मुखरित होता है–

तुम कहते हो गीत सुनाओ श्तो कैसे गाऊं और गवाऊं रे।
मेरे हिरदा पीर जगी है कैसे गाऊं और गवाऊं रे।
आशाओं की पी पी कर खाली प्याली, मैं बूंद–बूंद को तरसा हूं,
उम्मीदों का सेहरा बांधे, मैं द्वार–द्वार भटका हूं,
तुम कहते हो राह बताऊँ तो कैसे राह दिखाऊं रे।
मन एक व्यथा जागी है। कैसे हमराही बन जाऊं रे।

रंग–रंगों में रंगी नियति नटी क्या–क्या दृश्य दिखाती है,
पांतो की हर थिरकन पर मदमाती–मस्ताती है,
तुम कहते हो नाच दिखाऊं तो कैसे नाचू और नचाऊं रे।
मनमयूर विरहा रंजित है, कैसे नांचू और नचाऊं रे।
दिन दूनी सांस बांटता सपन रात दे आया हूं,
तन में थोड़ी सांस बची है, मन में थोड़ी आस बची है,
तिस पर तुमने सुरभि मांगी तो कैसे–कैसे मैं बिखराऊं रे।
तुम कहते हो गीत सुनाओ तो कैसे गाऊं और गवाऊं रे।

गीत गाते–गाते मैं लगभग रुआंसा हो गया था। अब फफक कर रो पड़ता हूं, तमाम लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, मैं नहीं जानता और न ही जानना उपयुक्त समझा। जिस मजबूती के साथ उसने मेरी कलाई थामी थी, उससे कहीं दूनी ताकत से मैंने उसका हाथ पकड़ा और लगभग घसीटता हुआ उसे बाहर ले आया। बाहर आते ही मैं वाक–युद्ध पर उतर आया था।

मित्र, तुमने मुझे जिगरी यार कहाय दोस्त कहा, मेरे गले में हाथ डाला और चिकनी–चुपड़ी बातें बनाकर यहां ले आए। तुमने मेरा स्वागत बड़ी गर्मजोशी के साथ किया। तुमने सबकी नजरों में मेरा मान बढ़ाया तो दूसरी ओर, तुमने मेरे साथ बड़ा ही भद्दा मजाक भी कर डाला। तुमने मुझे जलील किया। आखिर क्यों? मैं एक सांस में न जाने कितना कुछ बोल गया। परंतु वह न जाने किस मिट्टी का बना था कि उस पर कोई असर ही नहीं हो रहा था। बल्कि मेरे द्वारा अपमानित किए जाने के बावजूद उसके चेहरे पर पूर्व की तरह मंद–मंद मुस्कान खेल रही थी। उसने न तो अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की और न ही प्रयास किया। बल्कि मेरे आंखों में आंखें डालकर उसने कहा, अच्छा मित्र तो तुम मेरा नाम जानना चाहते हो! तो सुनो मेरा नाम वक्त है। लोग मुझे समय के नाम से भी जानते हैं। मैं सन 2025–2026 का मिला–जुला रूप तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। बस कुछ ही मिनटों के बाद मैं तुमसे विदाई ले लूंगा और फिर तुम्हारे सामने एक नूतन वर्ष के रूप में–एक नई सदी के रूप में प्रकट हो जाऊंगा। सारी दुनिया एक नई सदी का बेसब्री से इंतजार कर रही है। पर मित्र जाते–जाते मैं तुमसे एक पते की बात कहे जा रहा हूं। सच कहूं तुम मेरे अब भी मित्र हो। मैंने तुम्हें हकीकत के दर्शन कराए हैं। एक वास्तविकता से परिचित कराया है। और तुम हो कि बुरा मान गए। मेरी एक बात हमेशा ध्यान में रखना, जिस तरह तुम अपने गीतों में नये–नए रंग भरते हो–ठीक उसी की तरह अपने जीवन में ऐश्वर्य का भी रंग भरो। जी तोड़–ईमानदारी से मेहनत करो और उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ चलो। खूब धन कमाओ। बलशाली बनो, ताकि तुम कंचन और कामिनी का जी भरके उपभोग कर सको। धन एक ऐसी शक्ति है जिससे तुम अध्यात्म के शिखर पर भी जा सकते हो। सिद्धार्थ किसी भिखारी के घर नहीं जन्मे थे बल्कि वे राजा के बेटे थे, राजकुमार थे। धन बल से तृप्त होने के बाद ही वे बुद्ध कहला पाए। मैं भी उन्हीं का साथ देने को तत्पर रहता हूं जो सचमुच में कुछ बनना चाहते हैं। अच्छा दोस्त अब मैं विदा ले रहा हूं सारी दुनिया मेरी बाट जोह रही है।

सारा शहर पटाखों की गूंज से थिरक उठा। एक आतिशबाजी रंग–बिरंगी फुलझडियां बिखेरती हुई आसमान की तरफ उठती है। सहसा मेरा ध्यान उस ओर बंध जाता है तभी एक जोरदार धमाका होता है। काली अंधेरी रात में, नीले आकाश के बोर्ड पर एक–एक शब्द क्रमशः उभरते चले जाते हैंकृश्हेप्पी न्यू ईयर, वेलकम न्यू ईअर, स्वागतम्, नई शताब्दी।

नजरें झुका कर देखता हूं वह गायब हो चुका था।

सम्पर्क :103, कावेरी नगर,
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) मो. : 9424356400

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बंधित विवरण
घोषणा फार्म - 4

1 प्रकाशन स्थल	भोपाल
2 प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3 मुद्रक का नाम	वन्दना अत्रे
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	यनी हाउस, 141 अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल
4 प्रकाशक का नाम	वन्दना अत्रे
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	यनी हाउस, 141 अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल
5 सम्पादक का नाम	वन्दना अत्रे
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	यनी हाउस, 141 अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल
6 उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों	वन्दना अत्रे

मैं वन्दना अत्रे एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर
वन्दना अत्रे
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

ठिठुरते समय में

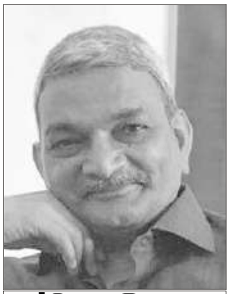

संदीप राशिनकर

बर्फबारी के
इस सर्दीले दौर में
जहां
जमती जा रही है
बर्फ की परतें
घरों पर पेड़ पौधों पर
गाड़ियों पर
और तो और
मेरे, तेरे उसके
आपसी संबंधों पर भी !
ऐसे
सहमते जमते,
ठिठुरते समय में
मैंने
बचा रखी है
संवेदना के कोने में
थोड़ी सी
रिश्तों की गमर्माहट
जो वक्त आने पर
गला सके, तोड़ सके
जमी हुई बर्फ
यहां, वहां
न जाने
कहां कहां ।।

सम्पर्क : आपले वाचनालय
राजेन्द्र नगर, इन्दौर
मो. : 9425314422

वंदे मातरम...

सुरेश तन्मय

देश प्रेम के गाएँ मंगल गान वंदे मातरम
तन–मन से हम करें राष्ट्र सम्मान वंदे
मातरम।।

हम सब ही तो कर्णधार हैं
प्यारे हिंदुस्तान के तीन रंग के गौरव
ध्वज को
फहराएँ हम शान से,
इसकी आन बान की खातिर चाहे जाएँ
प्राण वंदे मातरम देश प्रेम के गाएं मंगल
गान, वंदे मातरम।

धर्म पंथ जाति मजहब नहीं ऊँच–नीच का
भेद करें भाई चारा और प्रेम
सद्भावों के हम बीज धरें,
मातृभूमि दे रही हमें धन–धान्य सुखद
वरदान, वंदे मातरम देश प्रेम के गाएँ
मंगल गान, वंदे मातरम
अमर रहे जनतंत्र शक्ति संपन्न रहे भारत
अपना सोने की चिड़िया फिर जगतगुरु हो
ये सब का सपना देश बने सिरमौर जगत
में ये दिल में अरमान, वंदे मातरम देश प्रेम
के गाएँ मंगल गान, वंदे मातरम।

युगों युगों तक लहराए
जय विजयी विश्व तिरंगा ये
अविरल बहती रहे, पुनीत
नर्मदा, जमुना, गंगा ये,
सजग जवान, सिपाही, सैनिक खेत और
खलिहान, वंदे मातरम देश प्रेम के गाएँ
मंगल गान, वंदे मातरम।

सम्पर्क : भोपाल/अलीगढ़

हमने आजादी

ओमप्रकाश चौरे

मेरे प्यारे भारतवासी,
हमने आजादी ऐसे नही पाई है।
आजाद' को खोकर,
हमने आजादी पाई है।
मेरे प्यारे भारतवासी,
हमने आजादी ऐसे नही पाई है।
मॉ के 'भगत' को फॉसी झुलाकर
हमने आजादी पाई है।
मेरे प्यारे भारतवासी,
हमने आजादी ऐसे नही पाई है।
वीर शहीदो के बलिदाने का
कर्ज हमे चुकाना है।
मेरे प्यारे भारतवासी,
हमने आजादी ऐसे नही पाई है।
सीना चीर देना तुम दुश्मन का
जो अब ऑख उठाये तो
मेरे प्यारे भारतवासी,
हमने आजादी ऐसे नही पाई है।

खण्डवा, मप्र

विजयी किया रणबांकुरों ने, आपरेशन सिंदूर

वीरेन्द्र वीर दसौंधी

पराक्रमी वीरो ने तोड़ा,पाक का सारा गुरूर।
विजयी किया रणबांकुरों ने,आपरेशन सिंदूर।।

शौर्य वान वीरों से हारा,घना आतंकी तिमिर।
मारे घर मे घुस आतंकी,किये तबाह नौ शिविर।।
वीरों के पराक्रम ने किया, पाक को चकनाचूर।
विजयी किया रणबांकुरों ने,आपरेशन सिंदूर।।

स्वदेशी शस्त्रों ने मचाया,पाक जमी कोहराम।
मार गिराए शस्त्र हवा मे, हमने शत्रु के तमाम।।
दुश्मन को मिला हर वार का, जवाब उसे भरपूर।
विजयी किया रणबांकुरों ने,आपरेशन सिंदूर।।

आया घुटनों के बल जल्दी, करवाया सीजफायर।
गिरगिट जैसा रंग बदला,हार देखकर कायर।।
हर बार खाता मात फिर भी,नही बदलता फितूर।
विजयी किया रणबांकुरों ने, आपरेशन सिंदूर।।

मो.:9425962292

राष्ट्रध्वज तिरंगा

डॉ. विजय आर चौरे

फर फर फर
फहराये हमारा
तिरंगा
आकाश में गर्व से
लहराए तिरंगा
भारत वर्ष की आन
शान बान तिरंगा
हमारा राष्ट्रध्वज
कहलाए तिरंगा
श्री पिंगली वेंकैया द्वारा यह निर्मित
बावीस जुलाई सैतालिस को हुआ अर्पित
अंगीकृत हो हुआ हमारा तिरंगा अमर
राष्ट्रदिवसों पर यह लहराता फर फर
खादी सिल्क कपड़े से यह बनता
मध्य भाग अशोक चक्र से सजता
नीला यह चक्र धर्मचक्र को दर्शाता
चौबीस तीलियों से विकास की गति बताता
समय प्रगति का प्रतीक यह प्यारा
केशरिया,श्वेत, हरे रंग से खिलता न्यारा
शक्ति, शांति ,समृद्धि की बात यह कहता
सुबह से शाम तक उत्तिष्ठ यह रहता
साहस, त्याग, बलिदान का प्रतीक
केसरिया रंग शान से देता ये संदेश
पवित्रता, शांति, अहिंसा, सत्य का
मध्य भाग संभालता प्यारा रंग श्वेत
प्यारा हरा रंग तिरंगे का है आधार
विश्वास ,हरियाली ,समृद्धि की देता बयार
प्रकृति को सुरक्षित रखने का देता संदेश
होता खुशहाल हमारा यह प्यारा देश

हम सब मिलकर रखें इसकी शान
कभी न घटने देंगें इसका मान व सम्मान
भले ही देना पड़े हमें अपने प्राण
यही हमारी शक्ति यही हमारी जान
तिरंगा हर सफल मंजिल की पहचान
आओ मिलकर फहराएँ इसे ससम्मान
जन गण मिलकर आओ गाएँ राष्ट्रगान
जय हिंद जय भारत से गूंजे आसमान

सेवानिवृत्त प्राध्यापक,
शासकीय होलकर विज्ञान
महाविद्यालय,इंदौर म प्र

गणतंत्र पर्व

मंगला शुक्ला

यह उत्सव बस
नहीं परेड,
है विचारों की
कदम ताल.
जो संविधान के
विवेक की,
ध्वजा उठाए चले
गर्व की चाल.
राज काज तख्त से नहीं,
कानून की किताब से है अनूप.
जन समूह नहीं भीड़तंत्र,
है चेतना का निज स्वरूप.
लोकतंत्र मत में ही नहीं बसता,
वह प्रश्न भी कर सकता है.
असहमति गलत हो जाये तो
संवाद भी तो हो सकता है
गणतंत्र झंडा फहराने में नहीं,
कुछ उत्तरदायित्व हैं जनता के.
न्याय,सहकारिता, भाईचारे ,
के व्यवहार भी हों समता के. कानून कमजोर को
बचाता है, इसका पक्षपात के ऊपर स्थान.
देश हमेशा से व्यक्ति से पहले,
सुरक्षा के घेरे में निर्धन सम्मान.
सलामी बस सुरक्षा प्रहरी को नहीं
उस गुरू के लिए भी है
जो नई सोच को है जगाता
उस पत्रकार को भी है
जो जनता के प्रश्न है उठाता
उस नागरिक के लिए भी जिसको चुप रहना है
आसान
पर हक के लिए बोलकर
आवाज पहुंचा दे आसमान
यही है गणतंत्र
जो केवल एक तारीख नहीं
जीवित दर्शन सबका अभिमान है यह जनसुधि
पर्व संविधान हमारा आत्म सम्मान
जय हिंद

17/31 इस्पात नगर, रिसाली भिलाई नगर
भिलाई (छत्तीसगढ़)

धुधरुगीत

रंजीत भालसे

म्हारा बाला न अ माइयो हाट रे नणदबाई
धुंधरा क्यांनी लाय
दूर देश से आईओ नणद बाई
तुमक कुण बुलायो वो ।। नणद बाई ।। धुधरा क्योंनी ....
झग्ल्यों नी लायी न टोपीनी लायी।
हात हलावती आई वो नणद बाई ।। धुधरो क्योंनी
कडानी लायी, कन्दरा नी लायी।
लुगडा की आस लई आयी वो नणद बाई ।। धुधरा क्योंनी ......
साती नी लायी, बतासा नी लायी।
एक गीत नी गवाडियो ।। नणद बाई ।। धुंधरा क्योंनी
जिम्या पुट्या न अ धोरी – साया ।
पछा–चल्या न अ कुल्हा झाइया ।। नणद बाई ।। धुधरो क्योंनी

फ्रीगंज, वार्ड 3 ग्राम भीकनगांव
खरगोन, मो. 9770808393

गीत-मान-मन्नत

हुकुमचंद अमोदे

माता पानड पानड दीयो बलृअ ।
थारी चवरा प अ लगी जगा जोत वो
आज म्हारा घर माता आई पावणी
वो तो माता की माय पूछअ वातुली
तु कअ आज कीन्ह निवतियों म्हारा पूत रे
मकअ निवतियों के अमुक भाई की माय रे
उन्ह घर जिमाड़ियो छे, दही आरू आतरे ।
आज म्हारा धर माता आई पावणी ।।

खरगोन

लोरी गीत

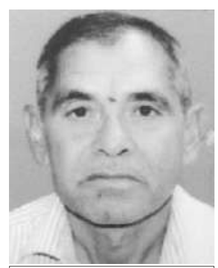

तोताराम अमोदे

बच्चों को पालने में सुलाने के वक्त
नाना सा भाई का नाना –नाना पायँ
ठुमक ठुमक भाई वाडी म अ जाय
वाडी म अ का फल फूल तोडी तोडी खाय
एतरा म अ आयी गई मालृण माय
भाई का लईलिया झगा न फल फूल
हाथ म अ दई दियो चमेली को फूल
भाई म्हारों सोव अ झोलृई म अ
कुतरों जाय होलृई म अ
हात रे हात रे कुतरा
हात रे कुतरा, हातरे बिलई

सम्पर्क : (आकाशवाणी कलाकार)
नन्दगांव बगूदवाले, वैष्णवी कॉलोनी, खरगोन

बच्चों को मनोरंजन के साथ एक नवीन दृष्टि प्रदान करती है पुस्तक 'नन्हें परों की ऊँची उड़ान'

पूर्णिमा मित्रा

बालकों के स्वस्थ मनोरंजन और सही मार्गदर्शन के रूप में बाल साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक समर्थ बाल साहित्यकार बच्चों को मनोरंजन के साथ साथ अपनी लेखनी के माध्यम से एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है। यह हर्ष की बात है कि पिछले एक दशक से बाल–साहित्य में अनेक लेखक –लेखिकाओं ने पदार्पण किया है। इससे बाल–साहित्य का भंडार समृद्ध हुआ है। परम्परागत विषयों के अलावा आज के बाल–साहित्यकार विविध ज्ञानवर्धक विषयों पर आधारित कहानियां लिख रहे हैं। इन्हीं बाल साहित्यकारों में एक सुपरिचित नाम है अंजली खेर का।

अंजली खेर कहानियां लगातार राष्ट्रीय स्तर की बाल पत्रिकाओं में छपती रहती है। भोपाल के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री महेश सक्सेना की प्रेरणा से अंजली खेर ने रंग संस्कृति पब्लिकेशन भोपाल के माध्यम से बाल कहानियों का यह संग्रह प्रकाशित करवा कर बाल पाठकों को एक अनूठा उपहार दिया।

इस संग्रह की सभी ग्यारह कहानियां बड़े मनोरंजक और सहज भाव से कोई न कोई सीख देती है। इस संग्रह की पहली कहानी श्खेल –खेल मेंश्का बालनायक कौतुहल अपने नाम के अनुरूप ही अपनी माता से आसपास के चीजों के बारे में प्रश्न पूछता ही रहता है। उसकी माता भी उसकी इस आदत पर न झल्लाकर समझदारी से उनका समाधान करती है।इस तरह कौतुहल का सामान्य ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ता रहता है। यह कहानी बालकों के साथ –साथ अभिभावकों के लिए भी पठनीय है।

इस संग्रह की दूसरी कहानी संकल्प में शिक्षिका के माध्यम से बताया गया है कि कड़ी मेहनत,लगन और सही मार्गदर्शन की बदौलत गरीब परिवार के बच्चे भी अपनी जीवन में बहुत आगे बढ़ सकते हैं। आजकल के बच्चे ,स्कूली पढ़ाई और ट्यूशन के कारण शारीरिक गतिविधियो में रुचि नहीं ले पाते। परीक्षा में अच्छे नंबर लाने के दबाव के कारण वे अपने सेहत पर भी ध्यान देना भूल जाते हैं। स्वास्थ्य और सेहत के जंबो भालू के माध्यम से बच्चों को सेहत का महत्व समझाया गया है।

दादाजी की डायरी में शतरंज खेलने के नियमों से अपने जीवन में आने वाली बाधाओं और असफलता से हार न मानकर ,उससे उबरने का रास्ता ढूंढने का मंत्र दिया है। आजकल छोटे छोटे बच्चों को स्मार्टफोन का ऐसा चस्का लगा है कि इसके पीछे वे पढ़ाई लिखाई, खेलकूद और सामाजिक व्यवहार आदि से कन्नी काटने लगे हैं। माता–पिता भी बच्चों की इस आदत से परेशान होते हैं। ऐसे बच्चों को किस तरह उचित शिक्षा दी जाये। इसे लेखिका ने बड़े रोचक ढंग से में चिंपू बंदर के माध्यम से उजागर किया है। इन कहानियों के अतिरिक्त अन्य कहानियां भी बालकों में मानवीय संवेदना के बीजारोपण करने में सक्षम है।आशा है, बाल मनोविज्ञान की कुशल पारखी लेखिका की कलम निरंतर यूं ही चलती रहेगी। आशा है बच्चों के जिज्ञासाओं व सोच को सही दिशा देने का संदेश देने वाली इस बाल संग्रह का बच्चों द्वारा स्वागत होगा। इसी मंगलकामना के साथ ।

बीकानेर, राजस्थान

नाटक वीर गोकुला से छह दिवसीय जनयोद्धा राष्ट्रीय नाट्य समारोह का शुभारम्भ

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा शहीद भवन में आयोजित छह दिवसीय जनयोद्धा राष्ट्रीय नाट्य समारोह के शुभारम्भ अवसर पर युवा रंग निर्देशक देव फौजदार द्वारा निर्देशित नाटक वीर गोकुला का मंचन हुआ

भोपाल। सत्रहवी शताब्दी में औरंगजेब का शासन चरम पर था और ब्रजभूमि के किसानों पर जजिया कर थोपना, मंदिरों को तोड़ना, मासूम औरतों पर अत्याचार और धर्म परिवर्तन जैसे अत्याचार हो रहे थे ऐसे समय में मथुरा की ब्रजभूमि में किसानों का नेतृत्व करने वाले वीर गोकुला जाट ने अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूंककर भारतीय धर्म, संस्कृति और अस्मिता को बचाये रखने के लिए ब्रजभूमि, सनातन धर्म और देवस्थलों की रक्षा करते हुए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। वीर गोकुला की वीरता, स्वाभिमान, समर्पण और संकल्पबद्धता को नाटक में बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा शहीद भवन में आयोजित छह दिवसीय जनयोद्धा राष्ट्रीय नाट्य समारोह के शुभारम्भ अवसर पर युवा रंग निर्देशक देव फौजदार द्वारा निर्देशित नाटक वीर गोकुला का मंचन हुआ। नाटक के निर्देशक फौजदार ने बताया कि गोकुला का संघर्ष केवल सत्ता के खिलाफ नहीं था बल्कि मानव गरिमा और धर्म की रक्षा के लिए था। गोकुला का शौर्य और बलिदान इतिहास का वह क्षण है जहां किसान समाज ने पहली बार अत्याचार के खिलाफ संगठित होकर प्रतिरोध का स्वर दिया। वीर गोकुला का बलिदान अत्याचार के विरुद्ध साहस, धर्मनिष्ठा और राष्ट्रभक्ति का अमर प्रतीक होकर आज भी युवाओं को प्रेरित करता है। नाट्य किरण मंच मुंबई के 15 से अधिक कलाकारों द्वारा अभिनीत नाटक में जोगिंदर बोकन, बेला बारोट, सत्यम दांगी, मानव तिवारी, कुलदीप, अनिल, पिंकेश, श्रीदीप, मेहश, नितिन, परविंदर, चित्रा, ताशी, गौरव एवं रोहित का अभिनय सराहनीय रहा। प्रकाश परिकल्पना जिमी सलगोत्रा, मंच परिकल्पना अजय कुमार एवं आदित्य की वेशभूषा ने नाटक को रोचकता प्रदान की।

जनयोद्धा राष्ट्रीय नाट्य समारोह की दूसरी शाम वीर कुंवर सिंह के शौर्य एवं साहस की मनमोहक प्रस्तुति

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वाराआयोजित जनयोद्धा राष्ट्रीय नाट्य समारोह की दूसरी शाम शहीद भवन में प्रांगण पटना के कलाकारों ने वरिष्ठ रंग निर्देशक अभय सिन्हा के निर्देशन में नाटक बाबू वीर कुंवर सिंह का मंचन किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की 1857 की क्रांति में बिहार के अनेक वीर सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति दी। ऐसे ही महान् योद्धा वीर कुंवर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध जंगे आजादी का बिगुल बजाकर ब्रिटिश सैनिकों को भारत से भागने के लिए मजबूर कर दिया। आरा कोषागार को लूटकर बंदीगृह के कैदियों को छुड़ाया। पटना के तत्कालीन कमिश्नर विलियम टेलर के कर्ज के बदले बागी सिपाहियों को पकड़वाने की शर्त को ठुकराते हुए अंग्रेज सैनिकों से युद्ध किया और गंगा पार करते समय ब्रिटिश सेनापति आयर की गोली से

घायल होने पर बांह काटकर गंगा में समर्पित करते हुए शहीद हो गये।

अभय सिन्हा निर्देशित एवं डॉ. चतुर्भुज की पटकथा पर आधारित बाबू वीर कुंवर सिंह नाट्य प्रस्तुति में वीर कुंवर सिंह की बलिदान गाथा से जुड़े घटनाक्रमों को कलाकारों द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। नाट्य प्रस्तुति में कुंवर सिंह के किरदार में संजय सिंह, उमर सिंह का अभिनय करने वाले आशुतोष कुमार, आयर बने अमिताभ रंजन सहित निलेश्वर मिश्रा, राजेश पाण्डेय, रत्नेश कुमार, अनिल वर्मा, संजय, अरविन्द, दिनेश, प्रकाश, सुनील, ओमप्रकार, सीमा, सुरभि, दृष्टि का अभिनय एवं रोशन कुमार की आकर्षक प्रकाश परिकल्पना, सुनील कुमार एवं प्रकाश भारती की मंच परिकल्पना, सीमा चक्रवर्ती की वेशभूषा, अरुण सिन्हा के गीत एवं रामकृष्ण सिंह का संगीत भी सराहनीय रहा।

बोंधू अहीर की वीरता और रणकौशल की अद्‌भुत प्रस्तुति

भोपाल। स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा आयोजित जनयोद्धा राष्ट्रीय नाट्य समारोह की चौथी शाम शहीद भवन में सूत्रधार आजमगढ़ के कलाकारों ने नौटंकी शैली से सजे नाटक बोंधू अहीर का मंचन किया। आजादी की लड़ाई में अनगिनत नायकों का अतुलनीय योगदान रहा है। ऐसे ही वीर हैं आजमगढ़ के 17 वीं वाहिनी के सूबेदार बोंधू सिंह अहीर जिन्होंने 1857 की क्रांति में वीरता का परिचय देते हुए ईस्ट इंडिया कंपनी का खजाना लूटा और आजादी के गदर में शामिल हो गये। बोंधू अहीर की जीवन गाथा, उनकी वीरता एवं रणकौशल को दर्शाते नाटक में आजमगढ़, फैजाबाद से लेकर कानपुर तक की यात्रा के चित्रण को बखूबी दिखाया गया है। नाटक बोंधू अहीर जहां एक तरफ अंग्रेजों के विरुद्ध तलवारों की झंकार सुनाता है वहीं दूसरी ओर नौटंकी शैली की बानगी भी पेश करता है। नाटक के निर्देशक अभिषेक पंडित ने बताया कि जिस आदमी का नाम सही ढंग से जानने के लिए देश–विदेश के पुस्तकालयों संग्रहालयों में खोज करनी पड़ी हो उस आदमी के जीवन पर नाटक बनाना बहुत ही कठिन कार्य था। काफी शोध और मुकम्मल जानकारी के आधार पर बोंधू अहीर प्रस्तुति तैयार की है। बोंधू अहीर भारत माता के कुछ विरले सपूतों में से हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अंग्रेजों के दमन से देश को मुक्त कराने के लिए अपना बलिदान दिया। प्रख्यात रंग निर्देशक अभिषेक पंडित के निर्देशन एवं शेषपाल सिंह की पटकथा पर केन्द्रित नाट्य प्रस्तुति बोंधू अहीर में 20 से अधिक कलाकारों द्वारा नाटक से जुड़े घटनाक्रमों को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। बोंधू अहीर के किरदार में ऋषिकेश मौर्य, रामटहल की भूमिका में राहुल यादव, शिवप्रसाद की भूमिका में सूरज यादव एवं अन्य कलाकारों में शिवा, सत्यम, शुभम, रणजीत, चंदन, छोटू, हर्ष, नेहा, सूरज का अभिनय सराहनीय रहा। प्रकाश व्यवस्था रमन कुमार, वेशभूषा सुग्रीव विश्वकर्मा एवं ममता पंडित, संगीत नीरज कुशवाहा, नक्कारा पर हरिश्चंद्र एवं ढोलक पर विशाल एवं मंच व्यवस्था सुमित पाठक की थी।

आत्म हत्या जैसा कदम उठाने वाली रिया टीचर के समझाने पर लेती है मेहनत करने का प्रण

20वे बसंतोत्सव के अवसर पर प्रतिज्ञा गोस्वामी के निर्देशन में पंख थिएटर एंड वेलफेयर सोसाइटी के कलाकारों ने नाटक 'विद्या का अर्थ' का किया मंचन

भोपाल। शुक्रवार को सुरताल के 20वे बसंतोत्सव के अवसर पर कर्फ्यूवाली माता के मंदिर परिसर में पंख थिएटर एंड वेलफेयर सोसाइटी के द्वारा नाटक नाटक शविद्या का अर्थश का मंचन किया गया। नितिन रोहर द्वारा लिखत इस नाटक का निर्देशन प्रतिज्ञा गोस्वामी ने किया। नाटक की कहानी में रिया एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है जो अपनी पढ़ाई पर ध्यान न देते हुए गलत संगत में पड़ जाती है। 12 क्लास में कम नंबर लाने के कारण रिया आत्महत्या जैसा कदम उठाने की कोशिश करती है, जिसे टीचर श्वेता बचाती है और रिया को समझाती है। टीचर श्वेता यह भी बताती हैं कि– विद्या पर सब का अधिकार है। विद्या का अर्थ जानने वाला ही सही मायनों में विद्या ग्रहण कर पाता है। अंत में रिया को अपनी गलती के अहसास होता है, वह टीचर एवं अपनी मां से माफी मांगती है और फिर से मेहनत करने का प्रण लेती है।।

नाटक की कहानी इस बात की ओर इंगित करती है कि मां बाप किस तरह मेहनत करके बच्चों को पढाते हैं और बच्चे अपनी मस्ती मजे में कैसे अपने ओर मां बाप के सपनों को तोड़ देते है, वहीं श्वेता जैसी शिक्षक बच्चों को सही रास्ता दिखाने का काम करती है।

रिया का चरित्र निभाया अंजलि ने तो श्वेता टीचर के किरदार में थी डॉक्टर आँचल बिसेन। मंच पर कपिल यादव,एलेक्स, प्रतिज्ञा, करुणा साही,राहुल महाकल आदि कलाकार भी अलग–अलग भूमिकाओं में दिखाई दिए।

कार्टूनिस्ट हरिओम तिवारी की नज़र से...

ब्रेल लिपि आँखों की कमी नहीं, चेतना की पूर्णता का प्रमाण है

महेश अग्रवाल

दृष्टि केवल आँखों से नहीं, चेतना से होती है मनुष्य जीवन में दृष्टि का विशेष महत्त्व है, परंतु उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है दृष्टिकोण। आँखें प्रकाश को ग्रहण करती हैं, किंतु चेतना सत्य को पहचानती है। संसार में करोड़ों लोग ऐसे हैं जिनकी आँखें प्रकाश नहीं देख पातीं, पर उनका अंतर्मन, बुद्धि और आत्मबल पूर्ण प्रकाश से भरा होता है। ऐसे ही लोगों के जीवन में ब्रेल लिपि एक सेतु बनकर आती है – ज्ञान, शिक्षा, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का सेतु। विश्व ब्रेल दिवस, जो प्रत्येक वर्ष 4 जनवरी को मनाया जाता है, केवल एक तिथि नहीं है, बल्कि यह मानवीय करुणा, समावेशी सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व का स्मरण दिवस है। यह दिन हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हमारा समाज वास्तव में समान अवसर देने वाला समाज बन पाया है?

ब्रेल लिपि के जनक – लुई ब्रेल अंधकार में प्रकाश की ज्योति ब्रेल लिपि के जनक लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी 1809 को फ्रांस में हुआ था। बाल्यावस्था में एक दुर्घटना के कारण उन्होंने अपनी दृष्टि खो दी। परंतु यह दृष्टिहीनता उनके लिए कमजोरी नहीं, बल्कि नव–सृजन की प्रेरणा बनी। उन्होंने अनुभव किया कि यदि दृष्टिबाधित व्यक्ति पढ़–लिख नहीं सकते, तो उनका बौद्धिक और सामाजिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। इसी पीड़ा और संकल्प से जन्म हुआ ब्रेल लिपि का – एक ऐसी स्पर्श आधारित लिपि, जिसने दृष्टिहीन व्यक्तियों को ज्ञान की स्वतंत्रता प्रदान की। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि लुई ब्रेल ने अक्षर नहीं बनाए, उन्होंने आत्मसम्मान गढ़ा।

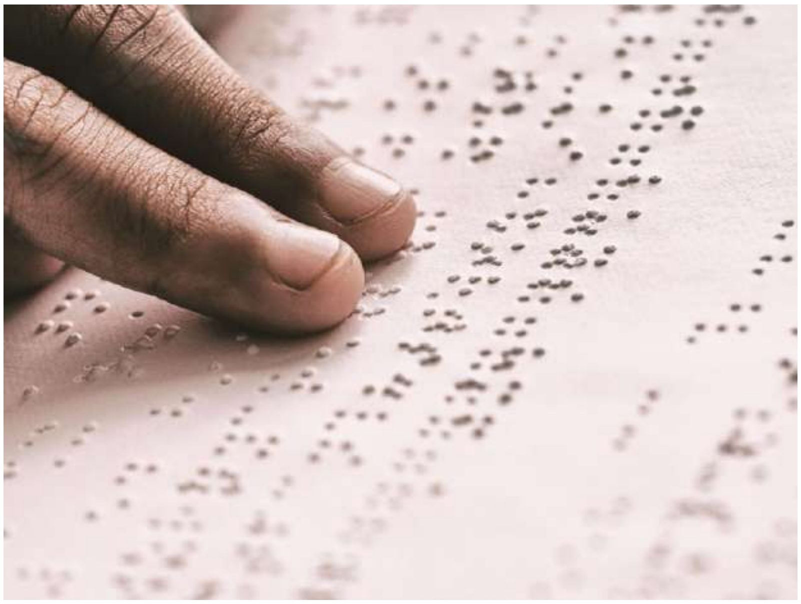

ब्रेल लिपि क्या है? – स्पर्श से संवाद की दिव्य कला ब्रेल लिपि छह बिंदुओं (डॉट्स) पर आधारित एक स्पर्शात्मक लिपि है। इन बिंदुओं के विभिन्न संयोजन से अक्षर, शब्द, संख्याएँ, गणितीय चिह्न और संगीत की लिपि तक बनाई जाती है। ब्रेल लिपि केवल पढ़ने–लिखने का साधन नहीं है, बल्कि यह – आत्मनिर्भरता का आधार, शिक्षा का प्रवेश द्वार, रोजगार की संभावना, आत्मविश्वास की नींव, सामाजिक समावेशन का माध्यम है। जैसे योग में स्पर्श, श्वास और चेतना का समन्वय होता है, वैसे ही ब्रेल में उँगलियों का स्पर्श और मस्तिष्क की सजगता मिलकर ज्ञान को प्रकट करती है।

योग गुरु अग्रवाल नें बताया कि लिपि का अर्थ केवल अक्षरों का क्रम नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और

ज्ञान को सुरक्षित रखने की मानवीय व्यवस्था है। जब वाणी क्षणभंगुर होती है, तब लिपि उसे स्थायित्व प्रदान करती है। लिपि ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा एक पीढ़ी का अनुभव दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। धर्म, दर्शन, योग, विज्ञान और संस्कृति – इन सभी की निरंतरता लिपि के कारण ही संभव हो पाती है। लिपि मनुष्य की चेतना को शब्दों में बाँधकर समाज की सामूहिक स्मृति बनाती है। चाहे देवनागरी हो, रोमन हो या ब्रेल – हर लिपि का मूल उद्देश्य एक ही है – ज्ञान को सीमाओं से मुक्त करना और मानवता को जोड़ना। इसलिए कहा जा सकता है कि लिपि केवल लिखने का साधन नहीं, बल्कि सभ्यता की आत्मा और संस्कारों की वाहक है।

ब्रेल लिपि लिपि के वास्तविक अर्थ और उद्देश्य को सबसे गहराई से प्रकट करती है। जहाँ सामान्य लिपियाँ आँखों से पढ़ी जाती हैं, वहीं ब्रेल उँगलियों के स्पर्श से चेतना को जाग्रत करती है। यह सिद्ध करती है कि ज्ञान देखने की वस्तु नहीं, अनुभव करने की प्रक्रिया है। ब्रेल लिपि दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए केवल अक्षरों का समूह नहीं, बल्कि शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सम्मानपूर्वक जीवन का आधार है। यह लिपि समाज को यह सिखाती है कि शारीरिक सीमा ज्ञान की सीमा नहीं होती। ब्रेल के माध्यम से विचारों का प्रवाह रुकता नहीं, बल्कि नए मार्गों से आगे बढ़ता है। इसलिए ब्रेल लिपि मानवीय करुणा, समान अधिकार और समावेशी चेतना की सजीव अभिव्यक्ति है।

दृष्टिबाधिता – शारीरिक अवस्था या सामाजिक चुनौती? दृष्टिबाधिता स्वयं में उतनी बड़ी समस्या नहीं है, जितनी समाज की असंवेदनशीलता। अक्सर देखा गया है कि – दृष्टिबाधित व्यक्तियों को दया की दृष्टि से देखा जाता है, उनकी क्षमताओं को कम आँका जाता है, निर्णय उनके स्थान पर दूसरे लेने लगते हैं जबकि सत्य यह है कि दृष्टिबाधित व्यक्ति – उत्कृष्ट शिक्षक, संगीतज्ञ, लेखक, योग प्रशिक्षक, समाजसेवी, प्रशासक बन चुके हैं और निरंतर बन रहे हैं। समस्या आँखों की नहीं, सोच की है।

ब्रेल और शिक्षा – समान अवसर की आधारशिला शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। यदि शिक्षा में समान अवसर नहीं हैं, तो विकास अधूरा रह जाता है। ब्रेल लिपि ने दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को – पाठ्यपुस्तकों तक पहुँच, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, उच्च शिक्षा, तकनीकी ज्ञान, प्रदान किया है। आज ब्रेल में – विज्ञान, गणित, दर्शन, धर्मग्रंथ, योग–शास्त्र, उपनिषद, गीता तक उपलब्ध हैं, जो यह सिद्ध करता है कि आध्यात्मिक ज्ञान पर किसी एक इंद्रिय का अधिकार नहीं।

ब्रेल और योग–दर्शन – आंतरिक दृष्टि का विज्ञान योग शास्त्र कहता है – चित्तवृत्ति निरोधः अर्थात जब चित्त की चंचलता शांत होती है, तब सत्य का साक्षात्कार होता है। यह साक्षात्कार आँखों से नहीं, अंतःदृष्टि से होता है। दृष्टिबाधित साधक प्रायः – ध्यान में अधिक गहराई से उतरते हैं, श्वास पर अधिक सजग होते हैं, स्पर्श और ध्वनि के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं यह उन्हें योग और ध्यान के क्षेत्र में विशेष रूप से सक्षम बनाता है। ब्रेल और योग दोनों ही हमें सिखाते हैं कि दृष्टि भीतर की ओर मोड़ो, वहीं सच्चा प्रकाश है।

धर्म और अध्यात्म में दृष्टिबाधिता की अवधारणा भारतीय दर्शन में अंधकार और प्रकाश केवल भौतिक नहीं, आध्यात्मिक प्रतीक हैं। अविद्या को अंधकार कहा गया, विद्या को प्रकाश। कई महापुरुषों ने कहा है कि – जिसके पास आँखें हैं, वह भी अंधा हो सकता है, और जिसके पास आँखें नहीं, वह भी दिव्य दृष्टि से युक्त हो सकता है। ब्रेल लिपि इस आध्यात्मिक सत्य का सामाजिक रूप है – ज्ञान सबका अधिकार है।

ब्रेल और सेवा – कर्मयोग की सजीव अभिव्यक्ति सेवा केवल दान नहीं, सशक्तिकरण है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए – ब्रेल पुस्तकों की उपलब्धता, सार्वजनिक स्थलों पर ब्रेल संकेत, लिफ्ट, बस, बैंक, अस्पताल में ब्रेल सुविधा, डिजिटल ब्रेल और ऑडियो संसाधन यह सब कर्मयोग के आधुनिक रूप हैं। सेवा वही श्रेष्ठ है, जो व्यक्ति को स्वावलंबी बनाए।

तकनीक और ब्रेल – भविष्य की दिशा आज तकनीक ने ब्रेल को नई ऊँचाइयाँ दी हैं – ब्रेल डिस्प्ले, ब्रेल प्रिंटर, स्क्रीन रीडर, मोबाइल – आधारित ब्रेल ऐप्स इनसे दृष्टिबाधित व्यक्ति – नौकरी, बैंकिंग, प्रशासन, ऑनलाइन शिक्षा में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। यह डिजिटल समरसता का युग है।

विश्व ब्रेल दिवस का वास्तविक संदेश विश्व ब्रेल दिवस केवल औपचारिक आयोजन का दिन नहीं, बल्कि

आत्ममंथन का अवसर है – क्या हम अपने घर, संस्था, आश्रम, योग केन्द्र में ब्रेल का स्थान बना पाए हैं? क्या हम दृष्टिबाधित व्यक्ति को सक्षम नागरिक मानते हैं? क्या हमारी भाषा में संवेदना है? यदि नहीं, तो यह दिवस हमें बदलने का आह्वान करता है।

समाज के लिए आह्वान – समावेशी चेतना की साधना

एक योग गुरु होने के नाते मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति को साथ लेकर नहीं चला जाएगा, तब तक साधना अधूरी है।

ब्रेल दिवस हमें सिखाता है – दया नहीं, सम्मान दें, सहानुभूति नहीं, सहयोग दें, अलगाव नहीं, समावेशन करें।

ब्रेल – मानवता की लिपि ब्रेल लिपि केवल छह बिंदुओं का संयोजन नहीं है, यह मानव गरिमा, समानता और आत्मनिर्भरता का शास्त्र है। जिस समाज में ब्रेल का सम्मान है, वहाँ संवेदना जीवित है। विश्व ब्रेल दिवस पर हमारा संकल्प हो – हम ऐसा समाज बनाएँगे जहाँ कोई भी अंधकार में अकेला न रहे, और ज्ञान का प्रकाश हर उँगली के स्पर्श तक पहुँचे।

सम्पर्क : सांई हिल्स कोलार रोड, भोपाल

मध्य प्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक गोष्ठी में आमंत्रित कवियों ने सुनाई राष्ट्रभक्ति और वीर रस की कविताएं

खंडवा/भोपाल। पिछले दिन भोपाल के दुष्यंत कुमार संग्रहालय में मध्य प्रदेश से चुनिंदा 12 कवियों को आमंत्रित किया गया था जिसमे खंडवा शहर के साहित्यकार/कवि तारकेश्वर चौरे भी सम्मिलित थे। तारकेश्वर चौरे ने अपनी रचना भारत माँ की आरती सुना प्रशंसा बटोरी ।

इस अवसर पर शहर के साहित्य धर्मी एवं प्रशंसकों में सुनील उपमन्यु,भुपेन्द्र मौर्य,डॉ. कुशाग्र चौरे दीपक चाकरे, डॉ. जगदीश चौरे,देवेंद्र जैन,जयश्री तिवारी,वर्षा उपाध्याय,मंगला चौरे, ओम प्रकाश चौरे एवं शुभम देवड़ा ने तारकेश्वर चौरे को बधाई दी।

आपले वाचनालय की पुणे में वाचन पहल

पुस्तकें और वाचन संस्कृति विकसित समाज की पहचान - भारद्वाज

इंदौर । पुस्तकें मानव को शिक्षित और ज्ञानी बनाकर न सिर्फ समाज को विकसित, मानव जीवन को सफल बनाती है वरन उन्नत और सभ्य समाज की पहचान ही है पुस्तकें और समृद्ध वाचन संस्कृति ।
यह विचार वरिष्ठ लेखक, चिंतक और हिन्दी आंदोलन परिवार के संस्थापक, अध्यक्ष संजय भारद्वाज ने आपले वाचनालय द्वारा वाकड पुणे के अटलांटा –II परिसर में स्थापित वाचनालय केंद्र के उद्घाटन अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किए। इसके साथ ही इंदौर के प्रतिष्ठित साहित्य , कला , संस्कृति केंद्र आपले वाचनालय ने वाचन संस्कृति के संवर्धन की अपनी पुणे पहल का शुभारंभ किया । इस अवसर पर डॉ . कृष्ण कुलश्रेष्ठ ने जहां वाचनालय सरोकार केंद्रित प्रभावी कविता का वाचन किया वहीं दीपक सराफ ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में समाज में रचनात्मक सहभागिता के श्रेष्ठत्व को प्रतिपादित किया । अतिथि स्वागत नन्हे शौर्य राशिनकर ने किया ।
सरस्वती पूजन व श्याम गुंडावर द्वारा गाई सरस्वती वंदना के पश्चात अतिथि द्वारा वाचनालय केंद्र का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का सुचारू संचालन श्रीति राशिनकर ने किया और आभार माना संदीप ने ।
इस अवसर पर सर्वश्री वाबले, आर.सी.सिंग, देशमुख , कालिदास जोशी , चौधरी , रवींद्र , कोडगिरे , अशोक भंडारी , अमोल गाढ़ेकर , गौरव श्रीवास्तव, धसे, भरत खटावकर, दीपक शर्मा , आकाश भोंडवे एवं डॉ . निशा कुलश्रेष्ठ , मेघना , श्रेयस राशिनकर आदि प्रबुद्ध जन उपस्थित थे।

निमाड़ की गणगौर को मिला राज्य स्तरीय पुरस्कार

खंडवा। (हेमंत उपाध्याय), 77 वें गणतंत्र दिवस समारोह मे प्रदेश के लोक नृत्यों के साथ खंडवा निमाड़ की गणगौर कलाकार अनुजा जोशी उपाध्याय के नेतृत्व में 50 कलाकारों को गणगौर नृत्य की प्रस्तुति के लिए राजधानी भोपाल आमंत्रित किया गया था। लाल परेड ग्राउंड व रवींद्र भवन में आयोजित समारोह में भी गणगौर दल आमंत्रित था। समारोह मैं झाकियों व नृत्यों को पुरस्कृत किया गया। अनुजा उपाध्याय खंडवा के दल को राज्य स्तरीय लोक नृत्यों में तृतीय पुरस्कार के लिये चुना गया,जिसके अंतर्गत दल को सम्मान पट व प्रमाण पत्र भेंट किया गए। इस अवसर पर निमाड़ खंडवा व गावों के कलाकारों से भेंट कर मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हार्दिक बधाई दी।

घर बैठे रंग संस्कृति के सदस्य बनें

सदस्यता फॉर्म

◆वार्षिक शुल्क 100-/◆ 3 वर्षीय शुल्क 270-/ ◆ 15 वर्षीय शुल्क 1100-/
(डाक खर्च अतिरिक्त)

नाम..

निवास पता ....

दूरभाष.. ईमेल..

Union Bank of India 0241

UPI ID: rangsanskriti@okaxis

स्कैन करें।

सदस्यता का प्रकार

★ वार्षिक/ 3 वर्षीय/ 15 वर्षीय शुल्क रूपये..

★ सदस्यता यूनियन बैंक शुल्क मनीआर्डर द्वारा या रंग संस्कृति के खाता क्रमांक 549101010050241 IFSC CODE UBINO554910

★ ड्राफ्ट/ चेक क्रमांक/यूपीआई ट्रांजेशन नं...

★ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा मंदाकिनी, कोलार रोड, भोपाल - 42 के माध्यम से जमा कर विवरण डाक द्वारा प्रेषित करें।

आपके पास यदि संस्कृति, रंगमंच, स्थानीय प्रतिभा खोज से संबंधित लेख, फोटो, समाचार एवं स्व-लिखित रचनाएं जिन्हें आप पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो निम्न पते/ ई-मेल पर भेजें

पता : यनी हाउस 141, अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म कोलार रोड, भोपाल - 462042 (म.प्र.)
प्रशासनिक कार्यालय - रंग संस्कृति पब्लिकेशन US-6/DK-4 दानिश कुंज कोलार रोड भोपाल
मो. : 9425004536, 9424410981 Email : rangsanskriti@gmail.com

26 जनवरी
सभी देशवासियों को
77 वें
गणतंत्र
दिवस
की
हार्दिक
शुभकामनाएं
REPUBLIC
DAY
JANUARY 26
बबीता परमार
अध्यक्ष नगर पालिका परिषद शुजालपुर
प्रदेश उपाध्यक्ष महिला मोर्चा भाजपा मध्यप्रदेश

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

77वें गणतंत्र दिवस की

प्रदेशवासियों को अनेक मंगलकामनाएं

"भारत के 77वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। आज राष्ट्र के हर नागरिक के हृदय में देशभक्ति और देश के लिए गर्व का भाव सशक्त हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व क्षमता के फलस्वरूप यह सब संभव हो पाया है। आज भारत वैश्विक शक्ति बनकर उभर रहा है।"

-**डॉ. मोहन यादव**, मुख्यमंत्री

डॉ. मोहन यादव का अभ्युदय मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश की उन्नति के मुख्य स्तंभ

अन्नदाता की समृद्धि से प्रगति की ओर मध्यप्रदेश

वर्ष 2026 को 'किसान कल्याण वर्ष' के रूप में घोषित किया गया है, इसका उद्देश्य अन्नदाता को समृद्ध और सशक्त बनाना है।

युवा शक्ति से राष्ट्र निर्माण

मध्यप्रदेश के युवा सक्षम और कौशलवान बनकर अपने सपनों को साकार करें और समाज में सकारात्मक बदलाव लाएं, इसके लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

गरीब एवं जनजातीय वर्ग की तरक्की का संकल्प

गरीब और जनजातीय वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार और समस्त मूलभूत सुविधाओं के लिए हमारी सरकार संकल्पित है।

सशक्त नारी - सशक्त मध्यप्रदेश

नारी परिवार और समाज का दर्पण होती है। महिलाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनके पोषण, स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा एवं रोज़गार तक का ख्याल प्रदेश सरकार रख रही है।

अतुल्य विरासत से वैभवशाली मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत अद्भुत एवं समृद्ध है। यहां नैसर्गिक सुंदरता के साथ-साथ कला और संस्कृति भी बहुआयामी है।

औद्योगिक विकास का नया अध्याय

मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास का एक उभरता केंद्र बन चुका है। गांवों को शहरों से जोड़ना हो या नए उद्योग स्थापित करने हों, प्रदेश आज चौतरफा विकास की ओर लगातार आगे बढ़ रहा है।

सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh | @Cmmadhyapradesh @JansamparkMP | JansamparkMP

D18086/25